क्यूँ दबें, किस से दबें हैं जो तेरे दर के गुलाम
ग़ौसे आज़म की हिफ़ाज़त में है बन्दा तेरा

अज़ क़लम : हुज़ूर मज़हरे आला हज़रत,
शेर बेशए अहले सुन्नत ब बारगाहे आला हज़रत क़द्दस सिर्रुहुमा

# रूहे ईमान


मुरत्तिब
नबीए मज़हरे आला हज़रत,
शहज़ादए शेरे हिन्दुस्तान, हज़रत अल्लामा मौलाना
**मुहम्मद अनादिल रज़ा ख़ाँ सा. हशमती**
पीलीभीत शरीफ़ (यू.पी.)



**असकरी अकेडमी**
आस्तानए आलिया हशमतिया
हशमत नगर, पीलीभीत शरीफ़ (यू.पी.)

ब फ़ैज़ाने करम

वारिसे उलूमे मज़हरे आला हज़रत, जा नशीन व मज़हरे शेर बेशए अहले सुन्नत
उम्दतुल फ़ुक़हा, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अबुल मुज़फ़्फ़र

**मुहम्मद मुशाहिद रज़ा ख़ान साहब क़िब्ला हश्मती**

कुद्दिसा सिर्रुहुल अज़ीज़ (पीलीभीत शरीफ़)

# रूहे ईमान

नबीरए मज़हरे आला हज़रत, शहज़ादए शेरे हिन्दुस्तान,
हज़रत अल्लामा मौलाना

**मुहम्मद अनादिल रज़ा ख़्वाँ**

**साहब क़िब्ला हश्मती**, पीलीभीत शरीफ़ (यू.पी.)

**असकरी अकेडमी**

आस्तानए आलिया हशमतिया, पीलीभीत शरीफ़ (यू.पी.)

**तक़सीमकार :** दारुल उलूम हश्मतुर्रज़ा,
246/101, हश्मती रोड, करनेल गंज, कानपुर (यू.पी.)
+ 91 97608 63598, 83070 29706, 94152 89828

नाम किताब : रूहे ईमान

मुरत्तिब : शहज़ादए शेरे हिन्दूस्तान हज़रत अल्लामा
**मुहम्मद अनादिल रज़ा ख़ाँ हश्मती**

इशाअत बारे अव्वल : ब मौक़ा आमदे रमज़ानुल मुबारक 1436 हि.

नाशिर : असकरी अकेडमी, आस्तानए आलिया हशमतिया, पीली भीत शरीफ़

## मिलने के पते

1) **रज़ा महल व चिश्ती हश्मती मरकज़,**
ख़्वाजा चोक, मस्जिद देसवालियान, डेगी बाज़ार, दरगाह अजमेर शरीफ

2) **जामिआ अहले सुन्नत दारुल उलूम हश्मतुर रज़ा,**
हश्मत नगर, पीली भीत शरीफ

3) **जामिआ अहले सुन्नत दारुल उलूम हश्मतुर्रज़ा**, करनेल गंज, कानपूर

4) **अल जामिअतुल हशमतिया मुशाहिदुल उलूम**, पीर इमाहम, गोन्डा

5) **अल जामिअतुल हादियतुल हशमतिया** दारुल उलूम अहमद
उमर डोसा, भिवन्डी

6) **दारुल उलूम रज़ाए ख़्वाजा**, अजमेर शरीफ, राजस्थान

7) **शेरे रज़ा अकेडमी**, वसई रोड, जिला थाना

8) **बज़्मे मुहिब्बाने रज़ाए इद्रीस**, चमन गन्ज, कानपूर

9) **तहफ़्फ़ुज़े अहले सुन्नत फ़ाउन्डेशन**, हीरा मन का पुरवा, कानपूर

# फ़हरिस्ते मज़ामीन

نحمدہ ونصلی ونسلم علی حبیبه الکریم

فاش می گویم واز گفتۂ خود دلشادم　　بندۂ عشقم واز ہر دو جہاں آزادم

(मैं खुल कर बात करता हूँ और अपने कहे हुए पर मेरा दिल खुश है, मैं इश्क़ का गुलाम हूँ और दोनों जहानों से आज़ाद हूँ)

(फतावा रज़विया शरीफ़ मुतरजम, जि. 30, स. 74)

यकीनन दुनिया दारुल अमल है और आख़िरत दारुल जज़ा, हर अच्छी जज़ा का तलबगार हर वक़्त यही कोशिश करता है कि उस से कोई ऐसा फ़ेअल सरज़द न हो जिस से उस की मेहनत व जाँ फ़शानी ज़ाए व राएगां हो जाए, हर मेअमार अपनी इमारत तामीर करने के वक़्त बुनियाद पर नज़र रखता है कि बुनियाद कमज़ोर न होने पाए इस लिये कि इमारत का सारा दारो मदार बुनियाद पर है। अगर बुनियाद न हो तो हर अदना से अदना अक़्ल रखने वाला जानता है कि इमारत तामीर ही नहीं हो सकती। नीज़ अगर बुनियाद कमज़ोर हो तो अव्वलन ज़्यादा ऊंची इमारत तामीर नहीं हो सकती। सानियन जो तामीर भी होगी उस के करार व इस्तिक़रार की कोई ज़मानत नहीं कि कब तक क़ाइम रहेगी बिला तशबीह व बिला तमसील नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात व जुमला आमाले सालिहा आख़िरत की तय्यारी हैं मगर उस की अस्ल व बुनियाद इश्क़े मुस्तफ़वी व महब्बते नबवी है सलल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बे इश्के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आमाले सालिहा की इमारत नहीं तामीर हो सकती बल्कि सब के सब मरदूद व महबूत हो जाएंगे। इरशादे खुदा वन्दी है :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝

**तर्जमा** : ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अमल अकारत न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो।

**(सूरए हुजरात, आयत 2, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान शरीफ़)**

## ईमान क्या है ?

बिला शक व शुबह इश्क़ व महब्बते रसूल ही का नाम ईमान है सरकार आला हज़रत फाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हर बात में सच्चा जाने, हुज़ूर की हक़्क़ानियत को सिदक़े दिल से मानना ईमान है जो उस का मक़र हो उस को मुसलमान जानेंगे जब कि उस के किसी कौल या फ़ेअल या हाल में अल्लाह व रसूल का इनकार या तकज़ीब या तौहीन न पाई जाए और जिस के दिल में अल्लाह व रसूल जल्लो उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इलाक़ा तमाम इलाक़ों पर ग़ालिब हो अल्लाह व रसूल के महबूबों से महब्बत रखे अगरचेह अपने दुश्मन हों और अल्लाह व रसूल के मुख़ालिफ़ों, बद गोयों से अदावत रखे अगरचेह अपने जिगर के टुकड़े हों, जो कुछ दे अल्लाह के लिये दे जो कुछ रोके अल्लाह के लिये रोके, सो उस का ईमान कामिल है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं :

اَحَبَّ لِلّٰہِ وَ اَبْغَضَ لِلّٰہِ وَ اَعْطٰی لِلّٰہِ وَ مَنَعَ لِلّٰہِ فَقَدِ اسْتَکْمَلَ الْاِیْمَانَ

(जिस ने अल्लाह तआला के लिये महब्बत की और अल्लाह तआला के लिये अदावत की और अल्लाह तआला के लिये दिया और अल्लाह तआला के लिये रोका, उस का ईमान कामिल है।) वल्लाहु तआला अअलम **(फ़तावा रज़विया शरीफ़ मुतरजम, जि. 29, स. 254)**

# मोमिन की शान ब आयाते कुरआन

ईमान वालों की शान क्या होनी चाहिये उन के अन्दर कैसी सिफ़तें होनी चाहिये इस से मुतअल्लिक़ ख़ुदावन्दे कुद्दूस इरशाद फ़रमाता है

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

**तर्जमा :** तुम न पाओगे उन लोगों को जो यकीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से मुख़ालिफ़ की अगरचेह वह उन के बाप या बेटे या भाई या कुंबे वाले हों यह हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अनी तरफ़ की रूह से उन की मदद की और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नेहरें बहें उन में हमेशा रहें अल्लाह उन से राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी यह अल्लाह की जमाअत है सुनता है अल्लाह ही की जमाअत कामयाब है।

(सूरह अल मुजादलह, आयत 22, कन्ज़ुल ईमान शरीफ़)

इस आयते मुबारका की तफ़सीर में हुज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं : यानी मोमिनीन से यह हो ही नहीं सकता और उन की यह शान ही नहीं और ईमान उस को गवारा ही नहीं करता कि ख़ुदा व रसूल के दुश्मन से दोस्ती करे।

इरशादे रब्बानी है :

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ

**तर्जमा :** मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) और उन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल। (सूरह फ़तह, आयत 29, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान शरीफ़)

यह आयते करीमा हज़रात सहाबए इज़ाम रज़ियल्लाहु तआला

अन्हुम की मदह व तारीफ़ में नाज़िल हुई है, इस वस्फ़े मुबारक पर दलालत करने वाले वाक़ेआत बे शुमार हैं बल्कि इन हज़राते आली मक़ाम का आलम तो यह था कि किसी काफ़िर के जिस्म से अपने जिस्म, किसी काफ़िर के कपड़े से अपने कपड़े को मस होने न देते थे। कोई बद मज़हबों, बद दीनों के साथ सुलह व इत्तिहाद पसन्द यह कह सकता है कि यह वस्फ़ उन के अन्दर था जिस की बुनियाद पर उन की तारीफ़ की गई है। हर मुसलमान पर कहाँ लाज़िम किया गया है। तो ऐसे सारे के सारे इत्तिहाद आँख फाड़ कर देखें। इसी आयते शरीफ़ा की तफ़सीर में साहिबे तफ़सीरे जुमल फ़रमाते हैं :

ومن حق المسلمين من كل زمان ان يراعوا هٰذا التذلل وهٰذا التعطف

فيشددوا علىٰ من ليس من دينهم ويعاشروا اخوانهم المؤمنين فى الاسلام

متعطفين بالبر والصلة والمعونة وكف الاذىٰ والاحتمال منهم

(अल फ़ुतूहाते इलाहिया, जि. 7, स. 229)

**तर्जमा :** हर ज़माने के मुसलमानों का हक़ है कि वह इस सख़्ती और इस नरमी की रिआयत करें। तो उन लोगों पर सख़्ती करें जो उन के दीन पर नहीं हैं और अपने मुसलमान भाइयों के साथ भलाई, सिला रहमी, मदद करते, तकलीफ़ दूर करते और ग़लती दर गुज़र करते हुए जिन्दगी गुज़ारें।

## उलमा की ज़िम्मेदारी

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने اَلْعُلَمَاءُ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَاءِ और علماء امتی کانبیاء بنی اسرائیل फ़रमा कर उलमा को उम्मत का ज़िम्मेदार व क़ाइद, रहबर व रहनुमा बना दिया और साथ ही साथ کل راع مسئول عن رعیته यानी हर जिम्मेदार से उस के मा तहतों के बारे में पूछा जाएगा। इस बात से हर बा शऊर आदमी वाक़िफ़ है कि जो शख़्स अपनी ज़िम्मेदारी निभाने में क़ोताही व ला परवाही बरतता है वह मुजरिम और अपने बड़े के यहाँ माख़ूज़

होता है लिहाज़ा उलमा की ज़िम्मेदारी है कि वह क़ौम व मिल्लत को ख़ैर व शर, हक़ व बातिल, सहीह व ग़लत और भलाई व बुराई से वाकिफ़ कराएं न कि ख़ुद हक व बातिल का इम्तियाज़ ख़त्म करने पर तुल जाएं। ज़िम्मेदारी से ग़फ़लत व ला परवाही बरतने वालों का अन्जाम भी अहादीसे मुबारका की रोशनी में पढ़ते चलें।

## ला परवाही बरतने वाले उलमा लअ़नते इलाही का शिकार

हुज़ूर शाफ़ए मेहशर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

لما وقعت بنو اسرائیل فی المعاصی فنهتهم علماء هم فلم ینتهوا فجالسوهم فی مجالسهم واکلوهم وشاربوهم فضرب الله قلوب بعضهم ببعض ولعنهم علیٰ لسان داؤد و عیسیٰ بن مریم ذلك بما عصوا و کانوا یعتدون لا والذی نفسی بیدہٖ حتیٰ تاطروهم علی الحق اطراً

यानी जब बनी इस्राईल गुनाहों में मुब्तला हुए तो उन के उलमा ने उन्हें मना किया वह बाज न आए तो यह उलमा उन के जलसों में शरीक होने लगे और उन के साथ हम निवाला व हम प्याला रहे पसे अल्लाह तआला ने उन के दिल एक दूसरे पर मार दिये (यानी पास बैठने से बद कारी का असर उन आलिमों के दिलों पर भी दौड़ गया) और अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ला व जल्ला ने दाऊद और ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम की ज़बानी उन सब पर लअ़नत फ़रमाई यह बदला था उन की ना फ़रमानियों का और हद से बढ़ने का क़सम उस की जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है तुम अज़ाब से नजात न पाओगे जब तक उन्हें हक़ की तरफ़ ख़ूब झुका न लाओ।

رواه الامام احمد وابو داؤد والترمذی وابن ماجه عن ابن مسعود والطبرانی عن ابی موسیٰ رضی الله تعالیٰ عنهما

**फ़ायदह :** उलमा व मशाइख़ को तंबीह फ़रमाई जा रही है। देखिये बावजूद यह कि वह उलमा मना करते थे लेकिन जब वह बाज़ न आए तो यह उलमा उन के पास बैठने उठने लगे कि शायद यूँ उन्हें हिदायत हो मगर हुआ यह कि कौम की हिदायत की बजाए उन्होंने ख़ुद अपने आप को हलाक कर दिया। इस हदीस शरीफ़ ने इन पालिसी बाज़ वाइज़ों और मौलवियों का भी रद कर दिया जो कहते हैं कि जी ! बद मज़हबों से उलफ़त व महब्बत और मेल जोल कर के उन्हें हिदायत करना चाहिये, उन के मजमों में जलसों में रुक्न और मिम्बर बन कर और शरीक हो कर बताना चाहिये। हदीसे करीम ने साफ़ फ़रमा दिया कि बदों की सोहबत का असर यह होता है। वल अयाज़ बिल्लाहि तबारक व तआला।

## मुसलमानों का क़त्ले आम क्यों ?

हुज़ूर मालिके दारैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे अर्श इश्तिबाह में अर्ज़ की गई :

اتہلك القرية وفيہا الصلحون قال نعم قيل بم يا رسول الله
قال بتہاونہم وسكوتہم

यानी या रसूलल्लाह कोई आबादी इस हालत में भी हलाक होती है कि उस में सालेहीन नेक लोग रहते हों। फ़रमाया हाँ, अर्ज़ की गई यह किस वजह से ? इरशाद फ़रमाया उनकी सुस्ती व ख़ामोशी के सबब से :

رواه البزاز والطبرانى عن ابن عباس رضى الله تعالى عنہما

**फ़ायदा :** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि साहिबे इस्तितआअत उलमा व मशाइख़ के सुकूते अनिल हक और सुस्ती की वजह से भी आबादियाँ हलाक व बरबाद की जाती हैं और यह सुकूत अनिल हक़ और पिलपिला पन अज़ाबे इलाही के नुज़ूल का सबब होता है।

किताब मुस्ततताब तबयीनुल मुहारिम में है :

اوحی اللہ تعالیٰ الیٰ یوشع ابن نون انی مھلک من قریتک اربعین الفا من خیارھم وسبعین الفا من شرارھم فقال یارب ھٰؤلاء الاشرار فما بال الاخیار فقال انھم لم یغضبوا الغضبی واکلوھم وشاربوھم

यानी अल्लाह तआला ने वही फ़रमाई यूशअ बिन नून अलैहिस्सलातो वस्सलाम को कि मैं तेरी बस्ती से चालीस हज़ार अच्छे नेक लोग और सत्तर हज़ार बुरे आदमी हलाक करूँगा। हज़रत यूशअ अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की इलाही ! बुरे तो बुरे हैं। मगर यह अच्छे क्यों हलाक किये जाएंगे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया इस लिये कि जिन पर मेरा ग़ज़ब था उन नेकों ने उन पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर न की बल्कि उन के साथ खाना पीना रखा, याराना गांठा :

ھٰکذا رواہ ابن ابی الدنیا و ابو الشیخ عن ابراھیم بن عمرو الصنعانی رضی اللہ تعالیٰ عنہ

देखो ! बद मज़हबों के साथ नफ़रत व बेज़ारी न रखना और उन से याराना दोस्ताना करना हलाकत का सबब बना और सुलह कुल्लियत व पालिसी बाज़ी कैसी बद बला है। आज का यह क़त्ले आम हमारे इन्हीं गुनाहों की सज़ा है।

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

عذب اھل القریۃ فیھا ثمانیۃ عشر الفا عملھم عمل الانبیاء قالوا یارسول اللہ کیف قال لم یکونوا یغضبون للہ ولا یأمرون بالمعروف ولا ینھون عن المنکر

यानी एक बस्ती पर अज़ाब उतरा उस बस्ती में अठारह हज़ार लोग थे जिन के अमल अम्बिया अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम के से अमल थे। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह ! इन अठारह हज़ार नेकों पर क्यों अज़ाब हुआ। इरशाद

फ़रमाया इस लिये कि वह लोग अल्लाह के लिये बद मज़हबों पर ग़ज़ब और नाराज़ी न करते थे और अच्छी बात का हुक्म करते थे न बुरी बात से रोकते थे। तबयीनुल मुहारिम।

अज़ीज़ मुसलमानो ! देखो बद मज़हबों के साथ मेल जोल रखने और हक़ बात न बताने और सुलह कुल्लियत बरतने पर अल्लाह तआला कितना ग़ज़ब फ़रमाता है। वल अयाज़ बिल्लाहि तआला

**क़ारेईने किराम !** मजकूरा बाला अहादीसे मुबारका की रोशनी में वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि हक़ से जबान रोकने की बुनियाद पर अज़ाबे इलाही नाज़िल होता है। आज जो मुसलमानों की बरबादी, तबाही व हलाकत हो रही है वह इसी सबब से हो रही है, यह सब नतीजा है इसी बात का कि हक नहीं बताया जा रहा है बल्कि उलमाए हक़ पर फबतियां कसी जा रही हैं , फ़ितने व फ़सादी कहा जा रहा है वर्ना सरकार आला हज़रत रज़ियल मौला तआला अन्हु तो फ़रमाते हैं

**इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते**
**हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा**

मतलब यह कि जिस के गले में सरकारे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गुलामी का पट्टा होगा वह मारा नहीं जाएगा और यहाँ मारे जा रहे हैं। नतीजा यह निकला कि सहीह मअनों में गुलामी का पट्टा नहीं है और यह भी मालूम हो गया कि हक न बोलने से अज़ाबे इलाही नाज़िल होता है तो पता चला कि सच्ची गुलामी यही है कि हक़ से ज़बान को न रोका जाए, क़ौम को आगाह करते रहें कि वहाबियत क्या है, देवबन्दियत क्या है, नदवियत क्या है, सुलह कुल्लियत क्या है।

**आज ले उन की पनाह आज मदद मांगने उनसे**
**फिर न मांनेंगे क़ियामत में अगर मान गया**

# हक़ न कहने वाले का अन्जाम

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :

والذی نفسی بیدہ لیخرجن من امتی من قبورھم فی صورۃ القردۃ والخنازیر بما اھنتہم فی المعاصی و کفہم عن النہی وھم یستطیعون

यानी ख़ुदा की कसम ज़रूर कुछ लोग मेरी उम्मत के अपनी कब्रों से बन्दरों और सुअरों की सूरत में निकलेंगे गुनाहों में पालिसी बाजी करने, मुदाहनत बरतने और नही अनिल आसी से चुप रहने के सबब बावजूद यह कि वह हक बात कहने और बुरी बात से मना करने की ताक़त रखते थे। (मुन्तख़ब कन्ज़ुल उम्माल, जि. अव्वल, स. 149)

عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما

उलमा और मशाइख़, पीरों, मुर्शिदों को खास तौर पर तंबीह फ़रमाई जा रही है कि बनी इस्राईल के उलमा, मशाइख़ तो बावजूद यह कि ख़ुद शरीअत की ना फ़रमानी नहीं करते थे बल्कि ना फरमानीए शरीअत करने वालों के साथ मुख़ालतत व मजालिसत व मुवाकिलत व मुशारिबत ही करने के सबब बन्दर और सुअर बना दिये गए। इस उम्मत को सब्ज़ गुम्बद के मकीन अर्श आज़म के मस्नद नशीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तुफ़ैल दुनिया में मस्ख़ सूरत के अज़ाबे आम से महफ़ूज़ रखा गया है। लेकिन इस उम्मत के पीरो मुर्शिद, आलिम व मौलवी कहलाने वाले अगर अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुख़ालिफों पर शरई रद व तरद से ख़ामोशी बरतेंगे तो क़ियामत के दिन अपनी अपनी कब्रों से बन्दर और सुअर बना कर उठाए जाएंगे। इसी मज़मून को हज़रत मौलाना जलालुल मिल्लते वद्दीन रूमी रहमतुल्लाहि तआला अलैह मसनवी शरीफ में यूँ बयान फ़रमाते हैं।

اندریں امت نشد مسخ بدن     لیک دل بود اے بوالفتن

यानी इस उम्मत में जिस्मों का मस्ख़ तो हुज़ूरे अकरम रहमते मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के तुफ़ैल आम तौर पर न होगा लेकिन अहक़ाक़े हक व अबताले बातिल से ख़ामोश रहने वालों के दिलों को बन्दरों और सुअरों के कुलूब के मिस्ल बना दिया जाएगा। वल अयाज़ बिल्लाहि तआला

## रद्दे वहाबिया फ़र्ज़े आज़म है

जब कोई गुमराह बद दीन राफ़जी हो या मिरज़ाई, वहाबी हो या देवबन्दी वग़ैरहुम ख़ज़लहुमुल्लाहु तआला अजमईन मुसलमानों को बहकाए, फ़ितना व फ़साद पैदा करे, तो उस का दफ़अ और कुलूबे मुसल्लेमीन से शुबहाते शयातीन का रफ़अ फ़र्जे आज़म है जो उस से रोकता है : يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا

में दाख़िल है कि अल्लाह की राह से रोकते हैं और उस में कजी चाहते हैं और ख़िलाफ़त कमेटी का हीला अल्लाह के फ़र्ज को बातिल नहीं करता, न शैतान के मक्र को दफ़ा करने से रोकना शैतान के सिवा किसी का काम हो सकता है, जो ऐसा कहते हैं अल्लाह अज्ज व जल्ला और शरीअते मुतह्हरा पर इफ्तिरा करते हैं मुस्तहिक्के अज़ाबे नार व ग़ज़बे जब्बार होते हैं, उधर हिन्दू से विदाद व इत्तिहाद मनाया, इधर रवाफ़िज़ व मिरज़ाइया वग़ैरहुम मलाइना का सद्दे फितना नाजाइज़ ठहराया, ग़रज़ यह है कि हर तरफ़ से हर तरह से इस्लाम को बे छुरी हलाल कर दें और ख़ुद मुसलमान बल्कि लीडर बने रहें :

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ○

मुसलमानों पर फ़र्ज है कि ऐसे गुमराहों, गुमराह गरों, बे दीनों की बात पर कान न रखें। उन पर फ़र्ज है कि रवाफ़िज़ व मिरज़ाइया और ख़ुद उन बे दीनों या जिस का फितना उठता देखें सद्दे बाब करें, वअज़े

उलमा की ज़रूरत हो वअज़ कहलवाएं, इशाअते रसाइल की हाजत हो इशाअत कराएं। हस्बे इस्तिताअत इस फ़र्ज़े अज़ीम में रुपये सर्फ़ करना मुसलमानों पर फ़र्ज़ है हदीस में है रसूलुल्लाह स'ल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

لما ظهرت الفتن اوقال البدع فليظهر العالم علمه ومن لم يفعل ذالك فعليه لعنة الله والملئكة والناس اجمعين لا يقبل الله منه صرفا ولا عدلا

जब ज़ाहिर हों फ़ितने या फ़साद या बद मज़हबियाँ और आलिम अपना इल्म उस वक़्त ज़ाहिर न करे तो उस पर अल्लाह और फ़रिश्तों और आदमियों सब की लअ़नत है, अल्लाह उस का फ़र्ज़ कुबूल करे न नफ़्ल। जब बद मज़हबों क़े दफ़ा न करने वालों पर यह लअ़नतें हैं तो जो ख़बीस उन के दफ़अ करने से रोके उस पर किस क़दर अशद ग़ज़ब व लअ़नते अकबर होगी।

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ

(फ़तावा रज़विया शरीफ़, जि. 21, स. 256, 257)

**क़ारेईन किराम !** मज़कूरा बाला फ़तवए मुबारका में शुरू के जुमलों को फिर से पढ़ें कि जब कोई गुमराह बद दीन राफ़ज़ी हो या मिरज़ाई, वहाबी हो या देवबन्दी वग़ैरहुम ख़ज़लहुमुल्लाहु तआला अजमईन मुसलमानों क़ो बहकाए फ़ितना व फ़साद पैदा करे तो उस का दफ़अ और कुलूबे मुसल्लेमीन से शुबहाते शयातीन का रफ़अ फ़र्ज़े आज़म है यानी दुश्मनाने दीन का रद्द फ़र्ज़े आज़म है। मगर आज कल की अजब बुल अजबियों हैं, ज़बान पर आला हज़रत, आला हज़रत की रट भी, मस्लके आला हज़रत पर अमल का दावा भी और रद्दे वहाबिया व दयाबनह से चिढ़ भी। ख़ास तौर से एक तन्ज़ीम है जो सुन्नत, सुन्नत की रट लगाती फिरती है, आला हज़रत के फ़तावा को मानने का दावा भी करती है। मगर फिर भी इस फ़र्ज़े आज़म से रोकती नज़र आती है। इस तन्ज़ीम के अमीर साहब अपनी नाम निहाद दावते इस्लामी के मनशूर में लिखते हैं। बयान में

बातिल फ़िरक़ों का रद हो न तज़किरा, सिर्फ़ ज़रूरतन मुसबत अन्दाज़ में अपने मस्लके हक़्क़ा का इज़हार हो ज़रा कोई पूछे उन ढोंगियों से कि फ़र्ज़ के छोड़ने वाले की नफ़्ल क़ुबूल है ? सुन्नत तो फ़र्ज़ की तकमील के लिये होती है और यहाँ सिरे से फ़र्ज़ ही नहीं बल्कि फ़र्ज़े आज़म पर पाबन्दी आइद हो रही है।

**दोरंगी छोड़ दे यक रंग हो जा**
**सरासर मोम हो जा या संग हो जा**

और साथ ही साथ सय्यिदी सरकार आला हज़रत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़तवए मुबारका के इन जुमलों को भी ग़ौर से पढ़ते चलें कि ख़िलाफ़त कमेटी का हीला अल्लाह के फ़र्ज़ को बातिल नहीं क़रता, न शैतान के मक्र को दफ़ा करने से रोकना शैतान के सिवा किसी का काम हो सकता है जो ख़बीस उन के दफ़अ करने से रोके उस पर किस क़द्र अशद ग़ज़ब व लअ़नते अकबर होगी। नीज़ उसी मुबारक फ़तवे में मज़कूर हदीसे पाक पढ़ कर ख़ूब अच्छी तरह ग़ौर व फ़िक्र कर लें कि ऐसे लोगों का ख़्वाह वह नाम निहाद दावते इस्लामी वाले हों फ़र्ज़ व नफ़्ल क़ुबूल होना तो बहुत बाद की बात है ऐसों पर लअ़नतें नाज़िल होती हैं। (वल अयाज़ बिल्लाहि तआला)

**हक़ से वद होके ज़माने का भला वनता है**
**अरे मैं ख़ूब समझता हूँ मुअम्मा तेरा**

# रद्दे वहाबिया के फ़ायदे

शरअतुल इस्लाम में है :

من سنة السلف الصالح مجانبة اهل البدع فان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ و علیٰ الہٖ وسلم قال لا تجالسوا اهل الاهواء والبدع فان لهم عرة کعرة الجرب وقد نهی النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیٰ الہ وسلم عن مفاتحة القدریة بالسلام و عن عیادة مر ضاهم و شهود مو تاهم و عن الاستماع لکلام اهل البدعة فان استطاع انتهارهم باشد القول واهانتهم بابلغ الهوان فعل ففی الحدیث من انتهر صاحب بدعة ملأ الله تعالیٰ قلبه امنا وایمانا ومن اهان صاحب بدعة امنه تعالیٰ یوم القیٰمة من الفزع الاکبر

यानी सलफ़े सालेह का तरीक़ा बद मज़हबों से कनारा कशी है इस लिये कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम ने फ़रमाया गुमराहों बद मज़हबों के पास न बैठो कि उनकी बला खुजली की तरह उड़ कर लगती है। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्म ने क़दरियों को इक़्तिदा ब सलाम करना और उन की बीमार पुरसी करना और उन के जनाज़े पर जाना और बद मज़हबों क़ी बात सुनना मना फ़रमाया। जहाँ तक सख़्त बात से हो सके उन्हें झिड़के और जिस क़द्र ज़लील कर सके उन्हें ज़लील करे कि हदीस शरीफ़ में है जो किसी बद मज़हब को झिड़के अल्लाह तआला उस का दिल अमन व अमान से भर दे और जो किसी बद मज़हब को ज़लील करे उसे रोज़े क़ियामत उस बड़ी घबराहट से अल्लाह तआला अमान बख़्शे। मुसलमानाने अहले सुन्नत सल्लहुम रब्बहुम ग़ौर व इन्साफ़ फ़रमाएं कि जब उन बद मज़हबों के मुतअल्लिक़ जो हद्दे कुफ़्र तक नहीं पहुँचे यह हुक्मे शरई है कि उन को इब्तिदाअन सलाम न किया जाए, वह बीमार पड़ें तो उन को देखने जाना जाइज़ नहीं,. वह मर जाएं तो उन के जनाज़े पर जाना जाइज़ नहीं,. उन की बात सुनना जाइज़ नहीं,. उन के पास बैठना जाइज़ नहीं,. जहाँ तक इस्तितताअत हो उन

को सख़्ती के साथ झिड़का जाए, जिस क़द्र अपनी कुदरत में हो उन की इहानत की जाए तो वह बद मज़हबाने ज़माना जिन की बद मजहबियाँ हद्दे कुफ्र व इरतिदाद तक मआज़ल्लाह पहुँची हुई हैं। जैसे नेचरिया व चकड़ालविया व मिरज़ाइया क़ादयानिया व लाहोरिया व ख़ाकसारिया मशरिक़ियह व वहाबियए देवबन्दिया वग़ैर मुक़ल्लेदीने ज़माना व रवाफ़िज़ आग़ाख़ानिया वहाबिया व बहाइया

اعاذنا الله رب البرية وجميع اهل السنة من عقائدهم الكفرية

उन के साथ सलाम कलाम करना, मेल जोल रखना, उलफत व महब्बत बरतना, उन को पेशवाए दीन व मुक्तदाए मुसलेमीन बनाना, उन से याराने, दोस्ताने, बिरादराने मनाना, उन के साथ विदाद व इत्तिहाद रचाना, उन को मुसलमानों से ऊंचा खड़ा कर के अवामे मुसलेमीन को उन का ख़ैर ख़्वाहे इस्लाम व मुसलेमीन होना बावर कराना, उन के लेकचर, उन की इस्पीचें भोले बाले मुसलमानों को सुनाना, उन की इज़्ज़त व अज़मत के गीत गाना, उन के लिये ज़िन्दा बाद के नअरे लगाना और इस तरह सीधे सादे अवाम अहलेसुन्नत के कुलूब में ख़ुदा व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही वसल्लम के दुश्मनों बद गोयों की वक़अत व महब्बत व उलफ़त व अज़मत जमाना ब हुक्मे शरीअते मुतह्हरा कैसा सख़्त अशद हराम व सबबे क़हर अज़ीज़ ज़ी इन्तिक़ाम व ग़ज़ब मुक़तदर अलाम होगा।

## रद्दे वहाबिया से शिफ़ा हासिल होती है

हदीसे पाक में है :

سمعت رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه و علىٰ اله وسلم يقول لحسان ان روح القدس لا يزال يؤيدك ما نافحت عن اله و رسوله و قالت سمعت رسول الله صلى الله عليه و علىٰ اله وسلم يقول هجاهم حسان فشفیٰ و استشفیٰ

यानी मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को हस्सान से फ़रमाते सुना कि रूहुल कुद्स जिब्रील अलैहिस्सलाम तेरी ताईद फ़रमाते हैं जब तक तू अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जानिब से उन के दुश्मनों के साथ मुख़ासिमत व मुदाफ़िअत करता रहता है और फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़रमाते सुना कि हस्सान ने काफ़िरों मुश्रिकों के उयूब, उन की बुराइयों का बयान किया तो मुसलमानों को उस ने शिफ़ा दी और अपने आप भी शिफ़ा हासिल की

رواه مسلم عن ام المومنين الصديقة رضی الله تعالیٰ عنها

इस मुबारक हदीस से मालूम हुआ कि काफ़िरों, मुरतद्दों, बद मज़हबों के उयूब व नक़ाइस बयान करने से ईमान वालों को शिफ़ा हासिल होती है, रूहानी बीमारियाँ दूर होती हैं क्यों कि दाफ़िइल बला वल वबा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इला यौमुल जज़ा के दुश्मनों बद गोयों का रद व तरद है। फ़ल हम्दु लिल्लाहि अला ज़ालिक।

## रद्दे वहाबिया करने वालों को सदक़े का सवाब

हुज़ूर सय्यदना नेअ़मतुल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैह व अला आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

من لم يكن عنده صدقة فليلعن اليهود

यानी जो ईमान दार मेरा उम्मती दौलते दुनिया न रखता हो कि सदक़ा करे तो उस को चाहिये कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल के दुश्मनों यहूद पर लअ़नत किया करे।

رواه الديلمی فی مسند الفردوس عن كنوز الحقائق للامام المناوی رحمه الله تعالیٰ

यानी नादार मुसलमान अगर यहूद व अमसालहुम ख़ुदा व रसूल के दुश्मनों पर लअ़नत करता रहे तो उस मुसलमान को सदक़े का सवाब मिलेगा।

## फ़ज़ाइले सदक़ा

हुज़ूर पुर नूर सय्यिदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

ان الصدقة لتطفئ غضب الرب و تدفع میتة السوء رواه الترمذی و حسنه و ابن حبان فی صحیحه عن انس بن مالک رضی الله تعالیٰ عنه

(बेशक सदक़ा रब अ़ज़्ज़ व जल्ला के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दफ़ा करता है। इसे तिर्मिज़ी और इब्ने हब्बान ने अपनी सही में अ़नस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया, तिर्मिज़ी ने इस की तहसीन की)

(फतावा रज़विया शरीफ़ मुतरजम, जि. 23, स. 137)

फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम :

الصدقة تمنع سبعین نوعا من انواع البلاء اهونها الجذام و البرص رواه الخطیب عن انس رضی الله تعالیٰ عنه

(सदक़ा सत्तर (70) बला को रोकता है जिन की आसान तर बदन बिगडना और सफ़ेद दाग़ हैं (वल अयाज़ बिल्लाहि तआला) उसे ख़तीब ने अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया।

फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम :

باکروا بالصدقة لا یتخطاها رواه الطبرانی عن امیر المؤمنین علی و البیهقی عن انس رضی الله تعالیٰ عنهما

(सुबह तड के सदक़ा दो कि बला सदक़ा से आगे क़दम नहीं बढाती (इसे तबरानी ने अमीरुल मोमिनीन अली और बैहक़ी ने अनस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया) (इज़न/ स. 139)

# अब कोई वहाबी ऐसा न रहा जिस की बिदअत कुफ़्र से गिरी हो

सय्यिदी सरकार आला हज़रत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : इन दयार में वहाबी उन लोगों को कहते हैं जो इस्माईल देहलवी के पीर और उस की किताब तक़वियतुल ईमान के मोअ़तक़िद हैं यह लोग मिस्ले शीआ, ख़ारजी, मोअ़तज़ेला वग़ैरहुम अहले सुन्नत व जमाअत के मुख़ालिफ़त मज़हब हैं। इन में से जिस शख़्स की बिदअत हद्दे कुफ़्र तक न हो यह उस वक़्त तक था अब किबराए वहाबिया ने खुले खुले ज़रूरियाते दीन का इनकार किया और तमाम वहाबिया उस में उन के मुवाफ़िक़ या कम अज़ कम उन के हामी या उन्हें मुसलमान जानने वाले हैं और यह सब सरीह कुफ़्र हैं। तो अब वहाबिया में कोई ऐसा न रहा जिस की बिदअत कुफ़्र से गिरी हुई हो ख़्वाह ग़ैर मुक़ल्लिद या ब ज़ाहिर मुक़ल्लिद।

نسأل الله العفو والعافية

(फ़तावा रज़विया शरीफ़ ग़ैर मुतरजम, जि. सौम, स. 169, 170)

# बद मज़हबों से दूरी में ही ईमान की आफ़ियत है

इमाम मुहम्मद बिन सीरीन शागिर्दे अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दो बद मज़हब आए, अर्ज़ की कुछ आयातें कलामुल्लाह आप को सुनाएं ? फ़रमाया सुनना नहीं चाहता। अर्ज़ की कुछ अहादीसे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सुनाएं ? फ़रमाया मैं सुनना नहीं चाहता, उन्होंने इसरार किया। फ़रमाया तुम दोनों उठ जाओ या मैं उठ जाता हूँ। आख़िर वह ख़ाइब व ख़ासिर चले गए, लोगों ने अर्ज की ऐ इमाम ! आप का क्या हरज था अगर वह कुछ आयतें या हदीसें सुनाते, फ़रमाया मैं ने ख़ौफ़ किया कि वह आयात व अहादीस के साथ अपनी कुछ तावील लगाएं और

वह मेरे दिल में रह जाए तो मैं हलाक हो जाऊँ। अइम्मा को यह ख़ौफ़ था और अब अवाम को यह जुरअत।

(फतावा रज़विया शरीफ मुतरजम, जि. 15, स. 108)

इस फ़रमाने आलीशान से वह सुलह कुल्ली मौलवी सबक़ हासिल करें जो वहाबियों, देवबन्दियों से मिलने जुलने की राह निकालते हैं और यह कहते नज़र आते हैं कि बद मज़हबों, बद दीनों से अलग रहने का हुक्म उन लोगों के लिये होना चाहिये जो उन के फ़रेब में फंस सकते हों मगर जो उन के अकाइद से वाकिफ़ हैं और उन के फंदे में नहीं फंसेंगे उन के लिये यह हुक्म नहीं होना चाहिये। क्या तुम्हारा मेअयारे इल्म और पुख़्तगीए एतिक़ाद हज़रत इमाम मुहम्मद बिन सीरीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी ज़्यादा है ? (मआज़ल्लाहे रब्बिल आलमीन)

## काफ़िरों पर शिद्दते सिद्दीक़ी का एक नमूना

सवाइकुल मुहर्रिका इमाम इब्ने हजर हेतमी में है :

كما في الصحيح في صلح الحديبية قوله لعروة بن مسعود الثقفي حين قال للنبي صلى الله عليه وعلى آله وسلم كأني بك وقد فر وعنك هؤلاء فقال ابو بكر امصص بظر اللات انحن نفر عنه او ندعه

यानी जैसा कि सहीह रिवायत में है कि सुलह हुदैबिया के मौक़े पर हज़रत उरवा बिन मस्ऊद सक्फ़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हज़रत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का फ़रमाना कि जब कि उरवा ने हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया कि आप को मैं उस वक़्त देखूँगा जब आप के यह सब साथी आप को छोड़ कर भाग जाएंगे तो हज़रत सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

अरवा को फ़रमाया चूस ले तूलात का बज़र क्या हम भागेंगे या हम हुज़ूर को छोड़ देंगे। (इस वक़्त तक हज़रत अरवा बिन मस्ऊद सक्फ़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान न लाए थे) अहले अक़्ल व दानिश से पूछो कि यह कैसी नरमी व लीनत है, कैसी तहज़ीब है। आज तक़रीर में अगर दुश्मनाने ख़ुदा व रसूल के तअल्लुक़ से कुछ सख़्त जुमले इस्तिमाल करें तो सुलह कुल्ली मिज़ाज व तबीअत के लोग ख़ूब वावेला मचाते हैं कि यह कहाँ की तहज़ीब है, मिम्बरे रसूल पर ऐसी बातें बोलना दुरुस्त नहीं है। इन तहज़ीब के अलमबरदारों को सुनाओ और उन से मालूम करो कि यह कैसी तहज़ीब है और महबूबे ख़ुदा के मुख़ालिफ़ से मुस्तफ़ा प्यारे की मौजूदगी में यह अलफ़ाज़ फ़रमाए जा रहे हैं और उन सुलह कुल्लियों का ख़ाना साज़ इत्तिहाद उस वक़्त हुज़ूर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने भी न बरता, न तो यारे ग़ार को मना किया न उन की जानिब से कोई उज़्र पेश किया बल्कि ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमा कर उम्मत को उस के जाइज़ और मस्नून होने की तालीम दी लेकिन अक़्ल व ईमान हो तो मालूम हो।

## नमूनए शिद्दते फ़ारुक़ी

ख़लीफ़ए दौम अमीरुल मोमिनीन हज़रत सय्यदना उमर फ़ारुक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के दौरे ख़िलाफ़त में एक इमाम का मस्अला पेश आया कि वह हर नमाज़ में

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى

तर्जमा : तेवरी चढ़ाई और मुंह फेरा उस पर यह कि उन के पास नाबीना (अब्दल्लाह उम्मे मकतूम) हाज़िर हुए) की ही तिलावत करता था। हज़रत सय्यदना फ़ारुक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने उस गांव में जाकर उस इमाम से पूछा कि नमाज़ में कौन सी सूरत तिलावत करते हो ? उस ने कहा सूरए अबसा व तवल्ला पढ़ता

हूँ। अमीरुल मोमिनीन ने पूछा सिर्फ़ यही सूरत क्यों पढ़ते हो ? उस ने कहा मुझे यह सूरत पढने में मज़ा आता है। इतना सुनना था कि अमीरुल मोमिनीन सय्यदना फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के तेवर बदल गए, जलाल में चेहरा सुर्ख़ हो गया और फ़रमाया : यह बारगाहे रिसालत पनाह से तुम्हारे दिल में इनाद है। तुम्हारे इस फ़ेअल से मुनाफ़िकत ज़ाहिर है और सिर्फ़ इस सूरत के पढ़ने पर उस को क़त्ल कर दिया। बज़ाहिर वह इमाम जो मुसलमान था कलमए इस्लाम पढने वाला, नमाज़ पढ़ने वाला, अहकामे शरीअत पर अमल करने वाला और कोई कुफ्र न था। सिर्फ़ उस के इस बयान पर कि इस सूरत को पढ़ने में मज़ा आता है, उस के दिल का इनाद ज़ाहिर हुआ और ऐसा इनाद जो बारगाहे मुस्तफ़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम में इहानत आमेज था, सिर्फ़ इस बुनियाद पर कलमा पढने वाला न देखा,इस्लामी सूरत न देखी, मुसलमानों का इमाम होना न देखा, अहकामाते इस्लामी का मानना और उस पर अमल करना न देखा, दिल का चोर पकड़ा गया, जिस दिल में अज़मते मुस्तफ़ा व महब्बते मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम न हो मुनाफ़िक़त है। उस को फ़ारूके आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने क़त्ल कर के वासिले जहन्नम कर दिया। तमाम नजदियों, वहाबियों और देवबन्दियों के इमाम इब्ने तैमिया की किताब अस्सारिमुल मसलूल अला शातिमुर्रसूल मैं भी हज़रत फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का इस इमाम को क़त्ल करने का वाक़िआ मौजूद है।

## पैग़ामे इमाम आली मक़ाम

फ़रजन्दे रसूल जिगर गोशए बतूल हज़रत सय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मैदाने करबला में उन मुद्दइयाने इस्लाम के साथ मेल जोल, याराना नहीं किया और दोस्ताना नहीं गांठा, यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन तस्लीम न किया, उस की

बैअत न फ़रमाई, कलमा गो, अहले क़िब्ला नमाज़ पढ़ने, मुसलमान कहलाने वालों की अकसरियत का साथ न दिया, पालिसी नहीं बरती, तक़िया न फ़रमाया। एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर को अमीर व ख़लीफ़ा बनाने के मुतअल्लिक़ हज़रत सय्यदना इमाम हुसैन शहीदे करबला दाफ़ए करबो बला शाहज़ादए गुलगूँ कुबा अला जद्दिही व अलैहिस्सलातो वस्सलामो वस्सना ने दश्ते जफ़ा के तपते हुए रेते पर अपने मुक़द्दस ख़ून के हरफ़ों से वह मुबारक सबक़ लिख दिया जिस को हर साल मुहर्रम का चाँद अज़ सरे नो ज़िन्दा कर दिया करता है। फिर उन यज़ीदियों वहाबियों देवबन्दियों की ताज़ीम व तकरीम करना कैसा शदीद हराम होगा।

## ताज़िया वाले अक़ीदतन हम में से हैं

(मुरव्वजा) ताज़ियादारी बिदअते अमली है वह इस हद तक नहीं कि उस के मुरतकिब मआज़ल्लाह राफ़ज़ी, वहाबी वग़ैरहुम ख़ुबसा की मिस्ल हों या मआज़ल्लाह उन की जमाअत जमाअत न हो या उन से इज्तिनाब ऐसा ही फ़र्ज़ हो जैसा उन ख़बीसों से, ज़रूरियाते दीन बालाए सर वह अक़ाइदे ज़रूरियए अहले सुन्नत के भी मुनकिर नहीं, न महबूबाने ख़ुदा की मआज़ल्लाह तौहीन करते हैं,. न किसी महबूब बारगाह से मआज़ल्लाह दुश्मनी रखते हैं फिर उन ख़बीसों को इन से किया निस्बत, यह अक़ीदतन हम में से हैं और जो कुछ करते हैं पेशे ख़ुद महब्बते महबूबाने ख़ुदा की नियत से करते हैं,. बराहे जिहालत व नादानी इस में लह्व व लअब व अफ़आले नाजाइज़ शामिल करते हैं। लिहाज़ा उन की जमाअत पर हुक्मे जमाअत न मानना महज़ ज़ुल्म है।

(फ़तावा रज़विया शरीफ़ मुतरजम, जि. 8, स. 455)

## आदमी अगर जानिबे अदब में ख़ता करे तो

सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं : आदमी अगर जानिबे अदब में ख़ता करे तो लाख जगह बहतर है उस से कि मआज़ल्लाह उस की खता जानिबे गुस्ताखी जाए। (फ़तावा रज़विया शरीफ़ मुतरजम, जि. 30, स. 289)

## सरकार आला हज़रत कुद्दिसा सिर्रहू के पसन्दीदा फुनून

मेरे वह फुनून जिन के साथ मुझे पूरी दिलचस्पी हासिल है जिन की महब्बत इश्क व शेफ़तगी की हद तक नसीब हुई है वह तीन हैं और तीनों बहुत अच्छे हैं (1) सब से पहला, सब से बेहतर, सब से आला, सब से कीमती फन यह है कि रसूलों के सरदार (सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैह व अलैहिम अजमईन) की जनाबे पाक की हिमायत के लिये उस वक्त कमर बस्ता हो जाता हों जब कोई कमीना वहाबी गुस्ता खाना कलाम के साथ आप की शान में ज़बान दराज़ करता है। मेरे परवरदिगार ने उसे कुबूल फ़रमा लिया तो वह मेरे लिये काफ़ी है मुझे अपने रब की रहमत से उम्मीद है कि वह कुबूल फ़रमाएगा। क्यों कि उस का इरशाद है कि मेरा बन्दा मेरी बाबत जो गुमान रखता है मैं उस के मुताबिक मुआमला फ़रमाता हूँ। (2) फिर दूसरे नम्बर पर वहाबियों के अलावा उन तमाम बिदअतियों के अकाइदे बातिला का रद कर के उन्हें गुज़िन्द पहुँचाता रहता हूँ जो दीन के मुद्दई होने के बावजूद दीन में फ़साद डालते रहते हैं। (3) फिर तीसरे नम्बर पर ब कदरे ताकत मज़हबे हन्फ़ी के मुताबिक फतवे तहरीर करता हूँ। वह मज़हब जो मज़बूत भी है और वाज़ेह भी। तो यह तीनों मेरी पनाह गाह की हैसियत रखते हैं इन्हीं पर मेरा भरोसा है, मेरा इन के लिये मुस्तइद रहना और इन का मेरे साथ मखसूस होना मेरे सीने को खूब ठन्डा करता है। अल्लाह तआला हमारे लिये काफ़ी है वह बहतरीन कार साज़ बहतरीन मौला बहतरीन वाली है।

(माख़ूज़ अज़ : अल इजाज़ातुल मतीना)

# हक़ गोई पर लाखों रियाज़तें कुरबान

सरकार आला हज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं : इमाम इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने लिखा है। एक आलिम साहब की वफ़ात हुई उन को किसी ने ख़्वाब में देखा पूछा आप के साथ क्या मुआमला हुआ फ़रमाया जन्नत अता की गई न इल्म के सबब बल्कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ इस निस्बत के सबब जो कुत्ते को राई के साथ होती है कि हर वक़्त भोंक भोंक कर भेड़ों को भेड़िये से होशियार करता रहता है मानें न मानें यह उन का काम, सरकार ने फ़रमाया कि भोंके जाओ बस इस कदर निस्बत काफ़ी है लाख रियाज़तें, लाख मुजाहिदे इस निस्बत पर कुरबान जिस को यह निस्बत हासिल है उस को किसी मुजाहिदे, किसी रियाज़त की ज़रूरत नहीं। (फिर फ़रमाया) और इसी में रियाज़त क्या थोड़ी है जो शख़्स उज़लत नशीन हो गया न उस के कल्ब को कोई तकलीफ़ पहुँच सकती है न उस की आँखों को न उस के कानों को, उस से कहिये जिस ने ओखली में सर दिया है और चारों तरफ़ से मूसल की मार पड रही है कई हज़ार की तादद में वह लोग होंगे जिन्होंने न मुझ को कभी देखा न मैं ने कभी उनको देखा और रोज़ाना सुबह उठ कर पहले मुझे कोसते होंगे और बे हम्दिही तआला लाखों की तादाद में वह लोग भी निकलेंगे जिन्होंने न मुझ को देखा और न मैं ने उन को देखा और रोज़ाना सुबह उठ कर नमाज़ के बाद मेरे लिये दुआ करते होंगे (फिर फ़रमाया) गालियों जो छापते हैं अखबारों में और इश्तिहारों में वह अख़बार व इश्तिहार तो रद्दी में जल कर ख़ाकस्तर हो जाते हैं लेकिन वह चुटकियाँ जो उन के दिलों में ली गई हैं वह कब्रों में साथ जाएंगी और इन्शाअल्लाह तआला हश्र में रुसवा करेंगी। सिद्दीक़ व फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के विसाल को तेरा सो बरस से ज़ाइद हुए इस वक़्त तक तबर्रे से उन्हें नजात नहीं यह क्यों इस लिये कि ग़ाशिया उठाया हक़ का अपने

कन्धों पर और दौर मिटाया अहले बातिल का।

رحم اللہ عمر ترکہ الحق مالہ من صدیق

अल्लाह रहमत करे उमर पर कि हक़ गोई ने उसे ऐसा कर दिया कि उस का कोई दोस्त न रहा। (अल मलफ़ूज़ शरीफ़ हिस्सा सौम, स. 36)

**वह तो निहायत सस्ता सोदा बेच रहे हैं जन्नत का**
**हम मुफ़लिस क्या मोल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है**

## महज़ इल्म काफ़ी नहीं

सरकार आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत फ़ाज़िले बरैलवी कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़ फ़रमाते हैं : इस्तिदलाल पर दारो मदार दो बातों की तरफ़ ले जाता है या हैरत या जलालत। इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की नज़अ का जब वक़्त आया शैतान आया कि उस वक़्त पूरी जान तोड़ कोशिश करता है कि किसी तरह इस का ईमान सल्ब हो जाए अगर उस वक़्त फिर गया तो फिर कभी न लौटेगा उस ने उन से पूछा कि तुम ने उम्र भर मुनाज़िरों मुबाहसों में गुज़ारी ख़ुदा को भी पहचाना ? आप ने फ़रमाया बे शक ख़ुदा एक है। उस ने कहा इस पर क्या दलील है ? आप ने एक दलील क़ाइम फ़रमाई। वह ख़बीस मुअल्लिमुल मलकूत रह चुका है उस ने वह दलील तोड दी। उन्होंने दूसरी दलील क़ाइम की। उस ने वह भी तोड़ दी यहाँ तक कि तीन सो साठ दलीलें हज़रत ने क़ाइम की और उस ने सब तोड़ दी। अब यह सख़्त परेशानी मैं और निहायत मायूस, आप के पीर हज़रत नजमुद्दीन कुबरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहीं दूर दराज़ मक़ाम पर वुज़ू फ़रमा रहे थे वहाँ से आप ने आवाज़ दी, कह क्यों नहीं देता कि मैं ने ख़ुदा को बे दलील एक माना।

**आफ़ताब आमद दलीले आफ़ताब**
**गर दलीले ख़्वाही अज़वे रू मताब**

(अल मलफ़ूज़ शरीफ, हिस्सा चहारुम, स. 379, 380)

## जिस को सल्बे ईमान का ख़ौफ़ न हो

सरकार आला हज़रत रज़ियल मौला तबारक व तआला अन्हु फ़रमाते हैं : नजात मुनहसिर है इस बात पर कि एक एक अक़ीदा अहले सुन्नत व जमाअत का ऐसा हो कि आसमान व ज़मीन टल जाएं और वह न टले फिर उस के साथ हर वक़्त ख़ौफ़ लगा हो। उलमाए किराम फ़रमाते हैं जिस को सल्बे ईमान का ख़ौफ़ न हो मरते वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाएगा। सय्यदना उमर फारूक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं अगर आसमान से निदा की जाए कि तमाम रूए ज़मीन के आदमी बख़्श दिये गए मगर एक शख़्स तो मैं ख़ौफ़ करूँगा कि वह शख़्स मैं ही न हूँ और अगर निदा की जाए रूए ज़मीन के तमाम आदमी दोज़ख़ी हैं सिवाए एक शख़्स के, तौ मैं उम्मीद करूँगा कि वह शख़्स मैं ही न हूँ। ख़ौफ़ व रिजा का मरतबा ऐसा मोअ़तदल होना चाहिये (फिर फ़रमाया) ख़ैर यह तो हिस्सा उमर का था (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) लेकिन कम से कम हर मुसलमान को इतना तो होना ही चाहिये कि सेहत व तन्दुरुस्ती के वक़्त ख़ौफ़ ग़ालिब हो और मरते वक़्त रिजा (यानी उम्मीद)। हदीस में है हर झटका मौत का हज़ार ज़रबे तलवार से सख़्त तर है मलाइका दबोचे बैठे रहते हैं वर्ना आदमी तड़प कर न मालूम कहाँ जाए उस वक़्त अगर मआज़ल्लाह कुछ इस तरफ़ से ना गवारी आई तो सल्बे ईमान हो गया इस लिये उस वक़्त बताया जाए कि किस के पास जा रहा है।

**(अल मलफ़ूज़ शरीफ़, हिस्सा चहारुम, स. 49, 50)**

## इआनते कुफ़्फ़ार ख़ुदाए तआला से इलाक़ए मक़बूलियत ख़त्म कर देती है

अर्ज़ : हुज़ूर हर साइल पर रहम खाना चाहिये ख़्वाह वह काफ़िर ही क्यों न हो कि कुरआने अज़ीम में : وَاَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ फ़रमाया है :

**इरशाद** : फिर साइल भी तो हो। बहरुर्राइक़ वग़ैरह में तसरीह है

कि काफ़िर हरबी पर कुछ तसद्दुक़ करना असलन जाइज़ नहीं। फ़रमाया यह भी इरशाद है : اَقِمِ الصَّلٰوۃَ नमाज़ पढो, तो क्या उस से यह मतलब है ख़्वाह वुज़ू हो या न हो, शर्त भी तो मौजूद होना चाहिये, न कि मुतलक़, फ़ुक़हाए किराम फ़रमाते है, अगर आदमी के पास एक प्यास का पानी हो और जंगल में एक कुत्ता और एक काफ़िर शिद्दते तशनगी से जां बलब हो तो कुत्ते को पिला दे और काफ़िरको न दे। हदीस शरीफ़ में है क़ियामत के दिन एक शख़्स हिसाब के लिये बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में ल़ाया जाएगा, उस से सवाल होगा क्या लाया ? वह कहेगा मैं ने इतनी नमाज़ें पढीं अ़लावा फ़र्ज के, इतने रोज़े रखे अलावा माहे रमज़ान के, इस क़दर ख़ैरात की अलावा ज़कात के और इस क़दर हज किये अलावा हज फ़र्ज़ के वग़ैरु ज़ालिक। इरशादे बारी होगा :

هل واليت لي وليا و عاديت لي عدوا

कभी मेरे महबूबों से महब्बत और मेरे दुश्मनों से अदावत भी रखी? तो उम्र भर की इबादत एक तरफ़ और ख़ुदा व रसूल की महब्बत एक तरफ़। अगर महब्बत नहीं सब इबादात व रियाजात बे कार।

साबित हुआ कि जुमला फ़राइज फ़रोअ हैं अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है बर के काटने से एक ज़रा सी आप को तकलीफ़ होती है, अगर कहीं ज़मीन पर उसे पडा देखें कि उस का एक पांव या पर बेकार हो गया है और उस में ताकते परवाज़ नहीं है तो उस पर रहम किया जाता है कि पैर से मसल देते हैं, तो ख़ुदा और रसूल अज़्ज़ जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ियाँ करें और उन से दुश्मनी व अदावत रखें, वह क़ाबिले रहम हैं ? हरगिज़ नहीं। अवाम की यह हालत है कि ज़रा किसी को नंगा मोहताज देखा समझे कि क़ाबिले रहम है, ख़्वाह ख़ुदा और रसूल का दुश्मन ही क्यों न हो, हजरत सय्यिदी अब्दुल अजीज दब्बाग़ कुद्दिसा सिर्रहू फ़रमाते हैं कि ज़रा सी इआनत काफ़िर की हत्ता कि अगर वह रास्ता पूछे और कोई मुसलमान बता दे, इतनी बात अल्लाह तआला

से उस का इलाक़ए मक़बूलियत क़तअ कर देती है, हाँ ज़िम्मी मस्तामन काफ़िरों के लिये शरअ में रिआयत के ख़ास अहकाम हैं, यह इस लिये कि इस्लाम अपने ज़िम्मे का पूरा है और अपने अहद का सचा है। (अल मलफ़ूज़, हिस्सा अव्वल, स. 93, 94)

## हक़ गो के बदगो ज़रूर होंगे

**अर्ज़** : वाक़ई अगर मुंह बन्द हुआ है तो हुज़ूर ही की ज़ाते बा बरकात से दिल में न मालूम क्या क्या कहते होंगे ?

**इरशाद** : इस का क्या ख़ौफ़, दिल में क्या बरमला फ़हश गालियाँ देते हैं बाज़ ख़ुबसा तो मुग़ल्लज़ात से भरे हुए बेरंग ख़ुतूत भेजते हैं फिर एक नहीं अल्लाहो आलम कितने आते हैं मुझे उस की परवाह नहीं, उस से ज़्यादा मेरी ज़ात पर हमले करें मैं तो शुक्र करता हूँ कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला ने मुझे दीने हक़ की सिपर बनाया कि जितनी देर वह मुझे कोसते, गालियाँ देते, बुरा भला कहते हैं इतनी देर अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तौहीन व तनक़ीस से बाज़ रहते हैं। इधर से कभी उस के जवाब का वहम भी नहीं होता और न कुछ बुरा मालूम होता है कि हमारी इज़्ज़त उन की इज़्ज़त पर निसार ही होने के लिये है बल्कि उन पर निसार होना ही इज़्ज़त है कुरआने अज़ीम में इरशाद फ़रमाया

وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اَذًى كَثِيْرًا ۝

अलबत्ता तुम मुशरिकों और अगले किताबियों से बहुत कुछ बुरा सुनोगे बडे बड़े अइम्मा व मुजतहेदीन व सहाबा व ताबेईन तो मुख़ालेफ़ीन के सब्बो शितम से बचे नहीं, यह दर किनार जब अल्लाह वाहिदे क़हहार और उस के प्यारे हबीब व महबूब अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान घटाना चाही, उन्हें ऐब लगाए तो और कोई किस गिनती में।

एक साहिबे विलायत ने हज़रत महबूबे इलाही कुद्दसल्लाहु

सिर्रहुल अज़ीज़ की बारगाह में हाज़री का मन्ज़िले दूर दराज़ से कस्द फ़रमाया, राह में जिस से हज़रत महबूबे इलाही साहब (रज़ियल मौला तआला अन्हु) का हाल दरयाफ्त फ़रमाते लोग तारीफ़ ही करते। उन्होंने अपने दिल में कहा मेरी मेहनत ज़ाए हुई कि यह अगर हक गो होते लोग जरूर उन के बदगो होते जब देहली क़रीब रही उन्होंने लोगों से पूछा। अब मजम्मतें सुनें कोई कहता वह देहली का मक्कार है कोई कुछ कहता कोई कुछ कहता, उन्होंने कहा अलहम्दु लिल्लाह मेरी मेहनत वुसूल हुई।

हज़रत यहया अलैहिस्लातो वस्सलाम ने बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अर्ज की इलाही ! मुझे ऐसा कर कि मुझे कोई बुरा न कहे। इरशादे बारी हुआ : ऐ यहया यह मैं ने अपने लिये तो क्या ही नहीं कोई मेरा शरीक बनाता है, कोई फरिश्तों को मेरी बेटियाँ बताता है, कोई मेरे लिये बेटे ठहराता है। लेकिन नबी की दुआ खाली नहीं जाती। आज आप देखते हैं कि हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ईसा अलैहिस्सलाम को अकसर बुरा कहने वाले मौजूद हैं लेकिन हज़रत यहया अलैहिस्सलाम का एक भी बुरा कहने वाला नहीं। कादयानी से बद जुबान को देखो सय्यदना ईसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की कैसी तौहीनें करता है यहाँ तक कि उन्होंने और उन की मां सिद्दीका बतूल ताहिरा को फ़हश गालियाँ तक देता है, चार सो अम्बिया को साफ झूटा लिखा हत्ता कि दरबारए हुदैबिया खुद शाने अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर नापाक हमला किया। मगर यहया अलैहिस्सलातो वस्सलाम की तारीफ ही की (यह फरमा कर इरशाद फरमाया) उस पर भी बाज अहमक सख़्ती का इल्जाम देते हैं और अल्लाह व रसूल को गालियाँ देना तो कोई बात ही न हो, न वह सख़्ती है न बे तहजीबी न कोई बुरी बात। इधर से उन की इस नापाक हरकत पर काफ़िर कहा और बस सख़्ती व बे तहजीबी सब कुछ हो गई। हाँ हाँ अल्लाह व रसूल की शान में जो गुस्ताख़ी करेगा उसे ज़रूर काफ़िर कहा जाएगा कसे बाशद और वल्लाह कि यह मैं अपनी तरफ़ से नहीं

कहता बल्कि अल्लाह व रसूल जल्लो उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अहकाम बयान करता हूँ मैं तो उन का चपरासी हूँ, चपरासी का काम ही सरकारी हुक्मनामा पहुँचाना है न कि अपनी तरफ़ से कोई हुक्म लगाना। अल्लाह के करम से उम्मीद कि वह कुबूल फ़रमाए। आमीन। (अलमलफ़ूज़, हिस्सा दोम, स. 50, 51, 52)

## मदारे मग़फ़िरत सिर्फ़ इश्क़े रसूल है

(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)

**अर्ज़ :** हुज़ूर एक रिवायत है कि बनी इसराईल में एक शख़्स दो सो बरस तक फ़िस्क़ो फुजूर में मुब्तला रहा और बादे इन्तिकाल उस की मग़फिरत फ़रमा दी गई इस वजह से कि उस ने तौरेत शरीफ़ में नामे पाक हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का देख कर चूम लिया था ?

**इरशाद :** हाँ सही है, उन का नाम मुस्तेह था। फिर फ़रमाया, उस के करम की कोई इन्तिहा उस की रहमत चाहे तो करोरों बरस के गुनाह धो दे गुलामी होना चाहिये सरकार की, एक नेकी से मुआफ़ फ़रमा दे, बल्कि उन गुनाहों को नेकियों से बदल दे और अगर अदल फ़रमाए तो करोरों बरस की नेकियाँ एक सग़ीरा के एवज़ रद फ़रमा दे। हदीस में इरशाद हुआ :कोई शख़्स बग़ैर अल्लाह की रहमत के अपने आमाल से जन्नत में नहीं जा सकता.......इस्तिहक़ाक़ किस बात का है, दुनिया ही का काइदा देखिये, अगर अजीर है मज़दूरी करेगा उजरत पाएगा और अगर अब्द है ममलूक है कितनी ही ख़िदमत करे कुछ न पाएगा हम सब तो उसी की मख़लूक व ममलूक हैं उस की रहमत ही रहमत है आप ही बन्दों को तौफ़ीक़ दी आप ही उन को अस्बाब दिये, आप ही आसान फ़रमाया, और फ़रमाता है बदला है उनके नेक अमलों का, नअमुल अब्द क्या अच्छा बन्दा है। अय्यूब अलैहिस्सलातो वस्सलाम कितने अर्से तक बला में मुब्तला रहे और सब्र भी कैसा जमील फ़रमाया, जब उस से नजात मिली अर्ज़ किया, इलाही ! मैं ने कैसा सब्र किया, इरशाद हुआ और तौफ़ीक़ किस घर

से लाया ? अय्यूब अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने अपने सर पर ख़ाक उड़ाई, अर्ज़ किया बे शक अगर तू तौफ़ीक़ न अता फ़रमाता तो मैं सब्र कहाँ से करता। (अल मलफ़ूज, हिस्सा सौम, स. 67, 68)

## दुनिया परस्त उलमा से बचो

हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

رب عابد جاهل عالم فاجر فاحذروا الجهال من العباد الفجار من العلماء

यानी बहुत आबिद जाहिल होंगे और बहुत आलिम तबाह कार होंगे तो जाहिल आबिदों और तबाह कार आलिमों लीडरों क़ाइदों से बचो।

رواه ابن عدی الدیلمی عن ابی امامة رضی الله تعالیٰ عنه

## दुनिया परस्त ग़ाफ़िल उलमा की ख़सलतें

कुदवतुल कामेलीन ज़ुबदतुल वासेलीन सय्यदना सरकार दाता गन्ज बख़्श सय्यद अली बिन उस्मान हिजवेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कश्फ़ुल महजूब शरीफ़ में फ़रमाते हैं : शैख़ुल मशाइख़ हज़रत यहया बिन मआज़ राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने क्या ख़ूब फ़रमाया है। तीन क़िस्म के लोगों की सोहबत से बचो एक ग़ाफ़िल उलमा से दूसरे मुदाहनत करने वाले फ़ुकरा से तीसरे जाहिल सूफ़िया से। ग़ाफ़िल उलमा वह हैं जिन्होंने दुनिया को अपने दिल का क़िब्ला बना रखा है और शरीअत में आसानी के मतलाशी रहते हैं, बादशाहों की परस्तिश करते, ज़ालिमों का दामन पकड़े हैं, उन के दरवाज़ों क़ा तवाफ़ करते हैं, ख़ल्क में इज़्ज़त व जाह को अपनी मेहराब गर दानते हैं, अपने ग़ुरूर तकब्बुर और अपनी ख़ुश पसन्दी पर फ़रेफ़्ता होते हैं, दानिस्ता अपनी बातों में रिक्क़त व सोज़ पेदा करते हैं, अइम्मा व पेशवाओं के बारे में ज़बान तअन दराज करते हैं। बुज़ुरगाने दीन की तहक़ीर करते हैं और उन पर ज़्यादती करते हैं। अगर उन के तराज़ू के

पलड़े में दोनों जहां की नेअमतें रख दो तब भी वह अपनी मज़मूम हरकतों से बाज़ न आएंगे। कीना व हसद को उन्होंने अपना शिआरे मज़हब क़रार दे लिया है। भला उन बातों का इल्म से क्या तअल्लुक़ ? इल्म तो ऐसी सिफ़त है जिस से जहल व नादानी की बातें,. अरबाबे इल्म के दिलों से फ़ना हो जाती हैं। (कश्फुल महजूब शरीफ़ मुतरजम, स. 47)

## जाहिल आबिद और फ़ासिक़ उलमा ने पीठ तोड़ दी

अमीरुल मोमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहु फ़रमाते हैं : दो शख़्सों ने मेरी पीठ तोड़ी (यानी वह बलाए बे दरमां हैं) जाहिल आबिद और आलिम जो एलानिया बेबाकाना गुनाहों का इरतिकाब करे। (फ़तावा रज़विया शवीफ़ मुतरजम, जि. 21, स. 527)

## शरअ सब पर हुज्जत है

सय्यिदी सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं : शरअ सब पर हुज्जत है, वह कौन है जो शरअ पर हुज्जत हो सके जिस का क़ौल हम इस्लाम व सुन्नत के मुताबिक़ पाएंगे तस्लीम करेगे न इस लिये कि उस का क़ौल है।

बल्कि इस लिये कि सिराते मुस्तक़ीम से मुताबिक़ है और जिस की बात ख़िलाफ़ पाऐंगे ज़ैद हो या अमर, ख़ालिद हो या कर दीवार से मार कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिकाब से लिपट जाएंगे अल्लाह उन का दामन हम से न छुड़ाए दुनिया में न उक़बा में। आमीन इलाही आमीन। (फ़तावा रज़विया शरीफ़ मुतरजम, जि. 27, स. 188)

## क़ियामत की तय्यारी

एक साहब ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम :

متی الساعۃ قال ویلك وما اعددت لها الا انی احب اللہ و رسولہ قال انت مع من
احببت قال انس فما رایت المسلمین فرحوا بشئ بعد الاسلام فرحھم بها

यानी क़ियामत कब है ? हुज़ूर ने फ़रमाया तेरी ख़राबी हो तूने क्या तय्यारी की है क़ियामत के लिये। उन्हों ने अर्ज़ की कोई चीज़ तय्यार नहीं की है मगर हाँ अल्लाह तआला और उस के प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्म के साथ महब्बत रखता हूँ। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तू उसी के साथ होगा जिस से महब्बत रखता है । हज़त अनस फ़रमाते हैं कि इस्लाम लाने के बाद मैं ने मुसलमानों को किसी चीज़ पर इतना ख़ुश व मसरूर नहीं देखा जितना इस इरशादे अक़दस को सुनकर ख़ुश हुए। رواه البخاری و مسلم عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ

मज़कूर बाला हदीस शरीफ़ नज़रों के सामने रखिये और शैख़ मुहक़्क़िक़ मुहद्दिसे अलल इतलाक़ सय्यदना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इश्क़ व ईमान अफ़रोज़, वहाबियत व सुलह कुल्लियत सोज़ इरशाद पढ़ें !

## जोहरे मग़फ़िरत

मुहद्दिसे अलल इतलाक़ हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : ऐ अल्लाह ! मेरा कोई अमल ऐसा नहीं जिसे तेरे दरबार में पेश करने के लाइक़ समझूँ। मेरे तमाम आमाल फ़सादे नियत का शिकार हैं अलबत्ता मुझ फ़क़ीर का एक अमल महज़ तेरी ही इनायत से इस क़ाबिल और लाइक़े इल्तिफ़ात है । वह यह कि मजलिसे मीलादे पाक के मौक़े पर खड़े होकर सलाम पढ़ता हूँ और निहायत ही आजिज़ी व इन्किसारी , महब्बत व ख़ुलूस के साथ तेरे हबीबे पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम भेजता हूँ। ऐ अल्लाह ! वह कौन सा मक़ाम है जहाँ मीलाद से बढ़ कर तेरी तरफ़ से ख़ैरो बरकत का नुज़ूल होता है। इस लिये अरहमुर्राहिमीन ! मुझे इस का यक़ीन है कि मेरा यह अमल कभी राएगां नहीं जाएगा बल्कि यक़ीनन तेरी बारगाह में क़ुबूल होगा और जो कोई दुरूदो सलाम पढ़े और उसके ज़रीए से दुआ करे

वह कभी मुस्तरद नहीं होगी। (अख़बारुल अख़यार शरीफ़, स. 62)

जान है इश्क़े मुस्तफ़ा रोज़े फ़ज़ूं करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यों

## दुश्मन तीन हैं

अर्ज़ : इन लोगों की निस्बत कि अगर बद मज़हब आलिम से मिलने को मना किया जाए तो कहें आलिम आलम सब एक हैं ?

इरशाद : उन का शुमार भी उन्हीं में से है अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला फ़रमाता है : ومن يتولهم منكم فانه منهم

तुम में जो उन से दोस्ती रखेगा वह बेशक उन्हीं में से है। अमीरुल मोमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम फ़रमाते हैं

الاعداء ثلثة عدوك وعدو صديقك وصديق عدوك

दुश्मन तीन हैं एक तेरा दुश्मन एक तेरे दोस्त का दुश्मन और एक तेरे दुश्मन का दोस्त। यू हैं अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला के दुश्मन तीनों क़िस्म हैं एक तो इब्दिाअन उस के दुश्मन वह काफ़िराने असली हैं : فان الله عدو للكفرين दूसरे वह कि महबूबाने ख़ुदा के दुश्मन हैं जैसे देवबन्दिया, मिरज़ाइया, वहाबिया, रवाफ़िज़ तीसरे वह कि उन दुश्मनों में किसी के दोस्त हैं। यह सब अदुवुल्लाह हैं, वल अयाज़ बिल्लाहि तआला। (अल मलफ़ूज़, हिस्सा दौम, स. 78, 79)

सुलह कुल्ली नबी का नहीं सुन्नियो !
सुन्नी मुस्लिम है सच्चा नबी के लिये

## वहाबिया, दयाबना से दुश्मनी ऐन ईमान है

अर्ज़ : हुजूर ह लोगों क़ो भी चाहिये कि उन को अपना दुश्मन जानें?

इरशाद : हर मुसलमान पर फ़र्ज़े आज़म है कि अल्लाह के सब दोस्तों से महब्बत रखे और उस के सब दुश्मनों से अदावत रखे यह

हमारा ऐन ईमान है। (उसी तज़किरे में फ़रमाया) बि हमदिल्लाहि तआला मैं ने जब से होश संभाला अल्लाह के सब दुश्मनों से दिल में सख़्त नफ़रत ही पाई। एक बार अपने देहात को गया था कोई देही मुक़दमा पेश आया जिस में चोपाल के तमाम मुलाज़िमों को बदायूँ जाना पड़ा मैं तन्हा रहा उस ज़माने में मआज़ल्लाह दर्द को लंज (आंतों का दर्द) के दौरे हुआ करते थे उस दिन ज़ोहर के वक़्त से दर्द शुरूअ हुआ उसी हालत में जिस तरह बना वुज़ू किया, अब नमाज़ को नहीं खड़ा हुआ जाता रब्बे अज़्ज व जल्ला से दुआ की और हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से मदद मांगी मौला अज़्ज व जल्ला मुज़्तर की पुकार सुनता है मैं ने सुन्नतों की नियत बांधी दर्द जाता रहा जब सलाम फेरा वही हालत थी बाद की सुन्नतें पढ़ीं दर्द मौक़ूफ़ और सलाम के बाद फिर बदस्तूर, मैं ने कहा अब अस्र तक होता रह, पलंग पर लेटा करवटें ले रहा था कि दर्द से किसी पहलू करार न था इतने में सामने से उसी गांव का एक कि (ख़बीस बज़अम ख़ुद क़रीब क़रीब तौहीद का क़ाइल और बराहे मक्रो फ़रेब मेरे ख़ुश करने के लिये मुसलमानों की तरफ़ माइल बनता था) गुज़रा फाटक खुला हुआ था मुझे देख कर अन्दर आया और मेरे पेट पर हाथ रखकर पूछा क्या यहाँ दर्द है मुझे उस का नजिस हाथ बदन को लगने से इतनी कराहत व नफ़रत पैदा हुई कि दर्द को भूल गया और यह तकलीफ़ उस से बढ कर मालूम हुई कि एक काफ़िर का हाथ मेरे पेट पर रहे। ऐसी अदावत रखना चाहिये। **(अल मलफ़ूज़, हिस्सा दौम, स. 79)**

**उन के दुश्मन का जो दुश्मन नहीं सच कहता हूँ**
**दावा बे अस्ल है झूटी है महब्बत तेरी**

तफ़सीर रूहुल बयान सूरए रअद शरीफ़ में फ़रमाया गया कि एक बुज़ुर्ग से रब ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने आलम की सारी चीज़ें तेरे लिये बनाई तूने मेरे लिये क्या किया? उन्हों ने अपनी इबादात पेश कीं। इरशादे इलाही हुआ कि यह इबादतें भी तूने अपने लिये ही की थीं ताकि दोज़ख़ से बच जाए और जन्नत हासिल कर ले, बता मेरे लिये

क्या किया ? अर्ज़ किया मौला ! फिर तेरे लिये कौन सा काम होता है? फ़रमाया कि मेरे प्यारों से महब्बत और मेरे दुश्मनों से अदावत।

(तफ़सीरे नईमी, जि. अव्वल, स. 243)

## बद मज़हबों के पास बैठने का असर

**अर्ज़ :** अकसर लोग बद मजहबों के पास जान बूझ कर बैठते हैं उन के लिये क्या हुक्म है ?

**इरशाद :** हराम है और बद मज़हब हो जाने का अन्देशा कामिल और दोस्ताना हो तो दीन के लिये जहरे क़ातिल, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्ल फ़रमाते हैं :

ایاکم وایاھم لا یضلونکم ولا یفتنونکم

उन्हें अपने से दूर करो और उन से दूर भागो वह तुम्हें गुमराह न कर दें कहीं वह तुम्हें फ़ितना में न डाल दें और अपने नफ़्स पर एतिमाद करने वाला बडे कज़्ज़ाब पर एतिमाद करता है :

انہا اکذب شیٔ اذا حلفت فکیف اذا وعدت

नफ़्स अगर कोई बात क़सम खा कर कहे तो सब से बढ़ कर झूटा है न कि जब ख़ाली वादा करे, सही हदीस में फ़रमाया जब दज्जाल निकलेगा कुछ उसे तमाशे के तौर पर देखने जाएंगे कि हम तो अपने दीन पर मुस्तकीम हैं हमें इस से क या नुक़सान होगा वहाँ जाकर वैसे ही हो जाएंगे। हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मैं हलफ़ से कहता हूँ कि जो जिस क़ौम से दोस्ती रखता है उस का हश्र उसी के साथ होगा। सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशाद हमारा ईमान और फिर हुज़ूर का हलफ़ से फ़रमाना।

दूसरी हदीस है जो काफ़िरों से महब्बत रखेगा वह उन्हीं में से है इमाम जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह शरहुस्सुदूर

में नक्ल फ़रमाते हैं : एक शख्स ख्वाफ़िज़ के पास बैठा करता था जब उस की नज़अ का वक़्त आया लोगों ने हसब मामूल उसे कलमए तैय्यिबा की तलकीन की। कहा नहीं कहा जाता। पूछा क्यों ? कहा यह दो शख्स खड़े कह रहे हैं तू उन के पास बैठा करता था जो अबू बक्र व उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) को बुरा कहते थे अब यह चाहता है कि कलमा पढ़ कर उठे हर गिज़ न पढ़ने देंगे। यह नतीजा है बद मज़हबों के पास बैठने का, जब सिद्दीक़ व फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के बद गोयों से मेल जोल की यह शामत है तो क़ादयानियों और वहाबियों और देवबन्दियों के पास नशिस्त व बरखास्त की आफ़त किस क़दर शदीद होगी, उन की बद गुमानी सहाबा तक है, इन की अम्बिया और सय्यिदुल अम्बिया और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला तक। **(अल मलफ़ूज़, हिस्सा दौम, स. 79, 80)**

अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है :

وَلِتَصْغٰۤى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ○

और इस लिये कि उन के दिल उस की तरफ़ कान लगाएं जिन्हें आखिरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और जो कुछ नापाकियाँ वह कर रहे हैं यह भी करने लगें। देखो उन की बातों की तरफ कान लगाना उन का काम बताया जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते और उस का नतीजा यह फरमाया कि वह मलऊन बातें उन पर असर कर जाएं और यह भी उन जैसे हो जाएं। वल अयाज़ बिल्लाहि तआला। लोग अपनी जिहालत से गुमान करते हैं कि हम अपने दिल से मुसलमान हैं हम पर उन का क्या असर होगा हालांकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :

من سمع بالدجال فلينأ منه فو الله ان الرجل ليأتيه وهو يحسب انه مؤمن فيتبعه ما يبعث به من الشبهات

जो दज्जाल की खबर सुने उस पर वाजिब है कि उस से दूर भागे कि खुदा की कसम आदमी उस के पास जाएगा और यह खयाल करेगा कि मैं तो मुसलमान हूँ यानी मुझे उस से क्या नुक़सान पहुँचेगा वहाँ उस के धोकों में पड़ कर उस का पैरो हो जाएगा। क्या दज्जाल एक उसी दज्जाल अखबस को समझते हो जो आने वाला है, हाशा ! तमाम गुमराहों के दाई, मुनादी सब दज्जाल हैं और सब से दूर भागने का ही हुक्म फ़रमाया और उस में यही अन्देशा बताया।

**(फ़तावा रज़विया शरीफ़ ग़ैर मुतरजम, जि. अव्वल, स. 215)**

## नबी की दुश्मनी के सबब, आलिम कुत्ते की शक्ल में जहन्नम में जाएगा

अस्हाबे कहफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का कुत्ता बलअम बाऊर की शक्ल बन कर जन्नत में जाएगा और वह उस कुत्ते की शक्ल हो कर दोजख में पड़ेगा इसी को फ़रमाया गया है :

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ

हम ने उस को अपनी आयतें दी तो वह निकल गया उन से और गुमराहों में से हो गया और अगर हम चाहते तो उस को इन आयतों के सबब बलन्द फ़रमा लेते लेकिन वह तो ज़मीन पकड़ गया उस से उठा न गया उस ने अपनी ख्वाहिश का इत्तिबाअ किया तो उस की मिस्ल कुत्ते की मिस्ल है अगर तू उस पर बोझ ला दे तो हांपे और अगर छोड़ दे तो हांपे यह उन लोगों की मिस्ल है जिन्होंने हमारी आयतों की तकज़ीब की (फिर फ़रमाया) उस ने महबूबाने खुदा का साथ दिया अल्लाह ने उस को इन्सान बना कर जन्नत अता फ़रमाई और उस ने महबूबाने खुदा से अदावत की बनी इस्राईल में बहुत बड़ा आलिम था मुस्तजाबुद्दावात था लोगों ने उस को बहुत सा माल दिया कि मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम के लिये बद्दुआ करे खबीस लालच में आ गया और बद्दुआ करनी चाही जो अलफ़ाज़ मूसा अलैहिस्सलातो

वस्सलाम के लिये कहना चाहता था अपने लिये निकले थे अल्लाह ने उस को हलाक कर दिया और उस्तुने हन्नानह शरीफ़ में उलमा का इख़्तिलाफ़ है एक रिवायत आई है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाा अगर तू चाहे तो तेरे बाग़ के अन्दर तुझे फिर लगा दिया जाए तुझ में पत्ते फल फूल आएं या जन्नत का एक पेड़ हो जन्नत के लोग तुझ से फ़ायदा उठाएं उस ने अर्ज़ किया दुनिया दारुल फ़ना है मैं ने दारुल फ़ना पर दारुल बक़ा को इख़्तियार किया हुज़ूर ने उस को मिम्बर के नीचे दफ़्न फ़रमा दिया, हज़रत मौलाना रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं

آں ستوں را دفن کرد اندر زمیں
تو چو مردم حشر یابد روز دیں

تا بدانی ہر کرا یزداں بخواند
از ہمہ کار جہاں بیکار ماند

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

## फ़ासिक़ों की इताअत के सबब अज़ाबे इलाही

सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिदे गिरामी ताजुल उलमा रासुल फ़ुज़ला हामिये सुन्नत माहिये बिदअत बकियतुस्सलफ़ हुज्जतुल ख़लफ़ ख़ातिमुल मुहक़्क़ेक़ीन हुज़ूर अल्लामा शाह मुफ़्ती मुहम्मद नक़ी अली ख़ाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी किताब सुरूरुल कुलूब फ़ी ज़िकरुल महबूब में तहरीर फ़रमाते हैं। एक रोज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम किसी शहर में ज़ा निकले, तमाम शहर मुर्दा पाया फ़रमाया यह लोग ग़ज़बे इलाही से मरे हैं कि बे गोरो कफ़न पड़े हैं। हवारियों ने अर्ज़ किया काश मालूम होता किस सबब से उन पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ। आपने उन्हें पुकारा एक ने जवाब दिया लब्बैका या रूहुल्लाह फ़रमाया : तुम्हारा क्या हाल हुआ ? अर्ज़ किया हम सब रात को आराम से सोए और सुबह

दोज़ख़ में दाख़िल हुए कि फ़ासिक़ों की इताअत करते और दुनिया को दोस्त रखते जैसे लड़का मां को दोस्त रखता है कि उस के आने से ख़ुश होता है और जाने से रोता है। फ़रमाया : उन में से ओरों ने क्यों न कलाम किया ? अर्ज़ किया आग की लगाम उन के मुंह में दी है। मैं भी उन के साथ था मगर उन में से न था। अब दोज़ख़ के कनारे पर हूँ देखिये बचूँ या न बचूँ। (सुरूरुल कुलूब शरीफ़ , स. 171)

## वहाबी कअ़बा में भी मरा तो जहन्नम में जाएगा

सय्यिदी सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं : हर गिज़ कोई मअसियत मुसलमान को जन्नत से महरूम और काफ़िर के बराबर नहीं कर सकती, अहले सुन्नत के नज़दीक मुसलमान का जन्नत में ज़ाना वाजिबे शरई है अगरचेह मआज़ल्लाह मुवाख़ज़े के बाद और काफ़िर का जन्नत में जाना मुहाल शरई कि अब्दुल आबाद तक कभी मुमकिन ही नहीं। (फ़तावा रज़विया मुतरजम, जि. 30, स. 276)

सय्यिदी सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दूसरी जगह तहरीर फ़रमाते हैं : बद मज़हब अगरचेह कैसा ही नमाज़ी हो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला के नज़दीक सुन्नी बे नमाज़ से बदर जहा बुरा है कि फ़िस्क़े अक़ीदा फ़िस्क़े अमल से सख़्त तर है।

(फ़तावा रज़विया शरीफ़ ग़ैर मुतरजम, जि. दौम, स. 193)

मज़कूरा बाला सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इबारात को दो बारह सह बारह पढ़ कर वह लोग अपने नज़रिये पर नज़रे सानी करें जो कह दिया करते हैं कि सुन्नियों से अच्छे तो देवबन्दी, वहाबी हैं (मआज़ल्लाह रब्बुल आलमीन) कि वह लोग नमाज़ रोज़ा के पाबन्द होते हैं और सुन्नी हज़रात सोमो सलात की पाबन्दी भी नहीं करते बस एक दूसरे को बुरा भला कहते हैं। कुछ ना वाक़िफ़ लोग यह भी कहते हुए नज़र आते हैं कि जहाँ से इस्लाम फैला

है वहाँ के रहने वालों को कैसे ग़लत कहा जा सकता है, वह लोग शरीअत के ख़िलाफ़ कोई काम कैसे कर सकते हैं ? तो यह देखिये सुरूरुल कुलूब शरीफ में सरकार आला हज़रत के वालिदे गिरामी तहरीर फ़रमाते हैं :

## ईमान का मिलना महज़ फ़ज़्ले ख़ुदा वन्दी है

**ऐ अज़ीज़ !** वह क़ादिरो मुख़्तार है जिसे चाहे कअबा में महरूम रखे कि ईमान की ख़ुश्बू उस के मशामे जान में न पहुँचे और जिसे चाहे बुत ख़ाने में महब्बत और शौक़ अपना इनायत करे कि बे इख़्तियार ज़िनार तोड़ कर मस्जिद की तरफ़ दौड़े।

(सरवरूल कुलूब शवीफ़, स. 83)

## हजरे असवद और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान मज़लूम क़त्ल होने वाला जहन्नम में जाएगा

हुज़ूर नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :

لو ان صاحب بدعة مكذبا بالقدر قتل مظلوما صابرا محتسبا بين الركن والمقام لم ينظر الله فى شئ من امره حتى يدخله جهنم

यानी अगर कोई बद मज़हब मस्अला तक़दीर को झुटलाने वाला हजरे असवद और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान मज़लूम क़त्ल किया जाए और अपने उस मारे जाने पर वह साबिर व तालिबे सवाबे ख़ुदा रहे जब भी अल्लाह अज़्ज़ व जल उस की किसी बात पर नज़रे करम न फ़रमाए यहाँ तक कि उस को जहन्नम में डाले।

اخرجه ابن الجوزى عن انس رضى الله تعالىٰ عنه

# बरकाती पैग़ाम अहले सुन्नत के नाम

ताजदारे मस्नदे बरकातिया मारहरा मुतहहरा कुदवतुल कामेलीन ज़ुबदतुल आरेफ़ीन हुज़ूर सय्यदना शाह अबुल हुसैन नूरी मियाँ साहब क़िब्ला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वहाबियों, देवबन्दियों, नेचरियों, राफ़ज़ियों के बारे में फ़रमाते हैं : कोई आज़ादी का क़ाइल, दहरियत का माइल है क़ैदे मज़हब लग़्व व फ़ुज़ूल, इम्तियाज़े मज़हब बातिल व मख़ज़ूल बर ख़िलाफ़े हुक्मे ख़ुदा व रसूल सब बद मज़हबों से इत्तिहाद इत्तिफ़ाक़ मक़बूल, तमद्दुन तरक़्क़ी तहज़ीब रोशनी क़ौमी हमदर्दी के तवील दावे, पासे दीन व हिफ़्ज़े मज़हब पर तअस्सुब नफ़सानियत ख़ुद कुशी सरफ़िट्टोल के फ़तवे फिर लुत्फ़ यह कि सब हज़रात या अकसर अपने आप को सुन्नी ही कहते हैं, सुन्नी ही होने का दावा रखते हैं।

تا سنیت نہ شد ز نبیل عیاراں شد

क़हर यह कि ज़माने की हवा देख कर बहुत दुनिया परस्त मौलवी भी इसी राह चले हैं। ऐ सच्चे सुन्नियो ! उमूमन और ऐ बरकाती मुतवस्सिलो ! खुसूसन तुम में जो अपना दीन अज़ीज़ रखता हो, जिसे रोज़े क़ियामत ख़ुदा व रसूल रूहानियत शरीअत व सुन्नत को मुंह दिखाना हो, जिसे हज़रत साहिबुल बरकात सय्यद शाह बरकतुल्लाह साहब व हज़रत ग़ौसुज़्ज़मां हुज़ूर अच्छे मियां साहेब व हज़रत दरयाए रहमत मुर्शिदी व जद्दी हुज़ूर आले रसूल अहमदी साहब रज़ियल्लाहु तआला अनहुम से इलाक़ा व तअल्लुक़ रखता हो वह राफ़ज़ियों, नेचरियों, वहाबियों, ग़ैर मुक़ल्लिदों, देवबन्दियों, उन मुद्दइयाने सुन्नत गन्दुम नमा जौ फ़रोशों, हक़ पोशों, बातिल कोशों के साए से दूर भागे। उन की ज़हरीली सोहबत आग जाने।

**(माख़ूज़ अज़ : नदवा का ठीक फ़ोटो ग्राफ़)**

# अजमेर शरीफ़ के नामे पाक के साथ लफ़्ज़ शरीफ़ न लिखना

सय्यिदी सरकार आला हज़रत रज़ियल मौला तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं : अजमेर शरीफ़ के नामे पाक के साथ लफ्ज़ शरीफ़ न लिखना और उन तमाम मवाक़ेअ में इस का इल्तिज़ाम करना अगर इस बिना पर है कि हुज़ूर सय्यदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जलवा अफ़रोज़ी हयाते ज़ाहिरी व मज़ार पर अनवार को (जिन के सबब मुसलमान अजमेर शरीफ़ कहते हैं) वजहे शराफ़त नहीं जानता तो गुमराह बल्कि उदूवुल्लाह है, सही बुख़ारी शरीफ़ में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला फ़रमाता है :

من عادیٰ لی ولیا فقد اذنته بالحرب

और अगर यह नापाक इल्तिज़ाम बर बिनाए कस्ल व कोतह क़ल्मी है तो सख़्त बे बरकता और फ़ज़्ले अज़ीम व ख़ैरे जसीम से महरूम है।

کما افادہ الامام المحقق محی الدین ابو زکریا قدس سرہ فی الترضی

और अगर उस का मुब्ना वहाबियत है तो वहाबियत कुफ़्र है। (फ़तावा रज़विया शरीफ़ ग़ैर मुतरजम, जि. शशुम, स. 187)

**क़ारेईने किराम !** ग़ौर फ़रमाएं कि जब सुल्तानुल हिन्द सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दयारे पाक के अदब व एहतिराम और रुतबा व मक़ाम का यह आलम है तो उस हस्तिये अज़ीमुल मरतबत ग़ौसुल अग़वास फ़रदुल अफ़राद कुतबुल अक़्ताब सरकार ग़ौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क्या मक़ाम व मरतबा होगा जिस ज़ाते बा बरकात ने फ़रमाया कि :

قدمی ھذہ علیٰ رقبۃ کل ولی اللہ

सय्यिदी सरकार आला हज़रत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत फ़ाज़िले बरैलवी कुद्दिसा सिर्रहुल क़वी फ़रमाते हैं :

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वह है तलवा तेरा

मगर नाम निहाद दावते इस्लामी का अमीर इल्यास अत्तार पाकिस्तानी अपने किताबचे मुन्ने की लाश के सफ़ा 2 पर सरकारे ग़ौसे आज़म दस्तगीर पीर रोशन ज़मीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में लिखता है मदनी मुन्ना वहाँ से भाग खड़ा हुआ। (मआज़ल्लाहे रब्बिल आलमीन)

**क़ारएईने मोहतरम !** ज़रा ग़ौर फ़रमाएं कि मुन्ना किस को कहते हैं बेटे, भतीजे, भांजे यानी छोटे बच्चों को प्यार से मुन्ना कहा जाता है। कोई बाप, दादा नाना वग़ैरह को मुन्ना नहीं कहता है। मेरे आक़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

**बाज़े अशहब की गुलामी से यह आँखें फिरनी**
**देख उड़ जाएगा ईमान का तोता तेरा**

## मौलवी इल्यास ने मदीना मुनव्वरह की तौहीन की

रसाइले अत्तारिया के सफ़ा 9 पर चालीस मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल का उनवान रख कर लिखता है (1) पेशाब, पाख़ाना, वदी, मज़ी, मनी, कीड़ा या पथरी मर्द या औरत के पीछे से निकले तो वुज़ू जाता रहेगा और सफ़ा 28 पर एहतिलाम के पाँच ज़रूरी अहकाम के उनवान के तहत लिखता है : मदीना मनी शहवत के साथ अपनी जगह से जुदा हो..........,मदीना : अगर मनी पतली पड़ गई.........मदीनाः अगर एहतिलाम होना...........मदीना : अपने हाथों से मादा ख़ारिज करने से.........

सय्यिदी सरकार आला हज़रत कुद्दिसा सिर्रहू तहरीर फ़रमाते हैं : ताज़ीम व बे ताज़ीमी में बड़ा दख़ल उर्फ़ को है। मुहक़्क़िक़ अलल

इतलाक़ फ़तहुल क़दीर में फ़रमाते हैं :

يحال على المعهود

यह मुआमला उर्फ़ और रिवाज के हवाले किया जाता है) (फ़तावा रज़विया शरीफ़ मुतरजम, जि. 23, स. 391)

## सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वसियते मुबारका

तुम मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की भोली भेड़ें हो, भेड़िये तुम्हारे चारों तरफ़ हैं यह चाहते हैं कि तुम्हें बहकाएं, तुम्हें फ़ितने में डाल दें, तुम्हें अपने साथ जहन्नम में ले जाएं, उन से बचो और दूर भागो देवबन्दी हुए, राफ़ज़ी हुए, नेचरी हुए, कादयानी हुए, चकड़ालवी हुए गरज़ कितने ही फ़िरक़े हुए और अब सब से नए गांधवी हुए जिन्होंने सब को अपने अन्दर ले लिया यह सब भेड़िये हैं, तुम्हारे ईमान की ताक में हैं, उन के हमलों से अपना ईमान बचाओ ! हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रब्बुल इज़्ज़त जल्ला जला लुहू के नूर हैं हुज़ूर से सहाबा रौशन हुए, उन से ताबेईन रौशन हुए, ताबेईन से तबअ ताबेईन रौशन हुए, उन से अइम्मए मुजतहेदीन रौशन हुए, उन से हम रौशन हुए, अब हम तुम से कहते हैं यह नूर हम से लो, हमें इस की ज़रूरत है कि तुम हम से रौशन हो वह नूर यह है कि अल्लाह व रसूल की सची महबब्त, उन की ताज़ीम और उन के दोस्तों की ख़िदमत और उन की तकरीम और उन के दुश्मनों से सची अदावत। जिस से अल्लाह व रसूल की शान में अदना तौहीन पाओ फिर वह तुम्हारा कैसा ही प्यारा क्यों न हो फौरन उस से जुदा हो जाओ, जिस को बारगाहे रिसालत में ज़रा भी गुस्ताख़ देखो फिर वह तुम्हारा कैसा ही बुज़ुर्ग मुअज़्ज़म क्यों न हो अपने अन्दर से उसे दूध से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दो। मैं पोने चौदह बरस की उम्र से यही बताता रहा और इस वक्त फिर यही अर्ज करता हूँ। अल्लाह तआला ज़रूर अपने

दीन की हिमायत के लिये किसी बन्दे को खड़ा कर देगा। मगर नहीं मालूम मेरे बाद जो आए कैसा हो और तुम्हें क्या बताए इस लिये इन बातों को ख़ूब सुन लो हुज्जतुल्लाह क़ाइम हो चुकी है। अब मैं क़ब्र से उठ कर तुम्हारे पास बताने न आऊँगा। जिस ने इसे सुना और माना क़ियामत के दिन उस के लिये नूर व नजात है और जिस ने न माना उस के लिये ज़ुलमत व हलाकत। यह तो ख़ुदा व रसूल की वसियत है जो यहाँ मौजूद हैं सुनें और मानें और जो यहाँ मौजूद नहीं तो हाज़िरीन पर फ़र्ज़ है उन तक पहुँचाएं।

## ग़ौर फ़रमाएं

अज़ीज़ सुन्नी मुसलमान भाइयो ! इन अहादीसे मुबारका व अक़वाले अइम्म व बुज़ुरगाने दीन को बार बार पढ़िये और ग़ौर कीजिये कि किस तसल्लुब व पुख़्तगी की तालीम दे रहे हैं और कुफ़्रे काफ़िरी से नफ़रत व बेज़ारी की क्या क्या ख़ूबियाँ और भलाइयाँ बता रहे हैं और बद मज़हब बद दीन, कुफ़्फ़ार व मुशरेकीन व मुरतद्दीन के साथ महब्बत व उल्फ़त, याराना दोस्ताना रखने की कैसी कैसी ख़राबियाँ, बुराइयाँ और उस की वईदें बयान फ़रमा रहे हैं। काश ! इस ज़माने के उलमा व मशाइख़, पीर व मुर्शिद भी अपने मुतवस्सेलीन व मुरीदीन, व मुतअल्लेमीन व मोअ़तक़ेदीन को इसी तसल्लुब व पुख़्तगी की तालीम देते तो मुसलमान यह दिन क्यों देखते ? आज जो भोले भाले मुसलमान बद मज़हबों, बद दीनों के पीछे लग कर गुमराह होते और अपनी अज़ीज़ दौलते ईमान को तबाह करते हैं,. उस की वजह यही है कि मुसलमानों को तसल्लुब फ़िद्दीन की तालीम नहीं दी जाती क योंकि बाज़ मौलवियों ने बद मज़हबों से तन्ख़्वाहें, वज़ीफ़े ले ले कर अपनी ज़बानें बन्द कर लीं। बाज़ ने चन्दों की कमी देख कर बद मज़हबों की हमनवाई की और बाज़ ने अपनी पीरी मुरीदी के लिये सुलह कुल्लियत को इख़्तियार किया और कोई उन की चिकनी चुपड़ी बातों, मुलम्मअ साज़ियों में फंस कर उन की हां में हां मिलाने

लगा और चन्द हक पसन्द व हक़ गो उलमाए किराम ऐलाने हक़ व अब्ताले बातिल फ़रमाने वाले रह गए जो खुल्लम खुल्ला कुरआन व हदीस के मुवाफ़िक़ और अइम्मए दीन के इरशादात के मुताबिक़ औलियाए कामेलीन मसलन हुज़ूर पुर नूर सय्यदना ग़ौसे आज़म पीराने पीर दस्तगीर व हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सुल्तानुल हिन्द अजमेरी व हज़रत ख़्वाजा बहाउल मिल्लत वद्दीन नुक़्शबन्द व हज़रत शैख़ुश्शुयूख़ शहाबुद्दीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन व हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी सर हिन्दी व हज़रत अबू हनीफ़तुल हिन्द शैख़ मुहक्क़िक मौलाना अश्शाह मुहम्मद अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी वग़ैरहुमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की पैरवी और इत्तिबाअ में इज़हारे हक़ फ़रमा रहे हैं और यही हैं वह हज़रात उलमाए किराम कसरहुमुल्लाहु तआला व अय्यदहुम जो इन तमाम बुज़ुरगाने दीन की नियाबत सही मअनों में कर रहे हैं और हम गुरबाए अहले सुन्नत व जमाअत को हुज़ूर पुर नूर इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लेमीन आला हज़रत अज़ीमुल बरकत मौलाना मौलवी हाफ़िज़ व क़ारी हाजी मुफ़्ती शाह अब्दुल मुस्तफ़ा मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ साहब क़िब्ला फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नाइब बन कर बिला ख़ौफ़ लौमता लाइम हक़ की तरफ़ रहनुमाई कर रहे हैं और हम सुन्नियों की कश्ती को बद मज़हबों बे दीनों के तूफ़ान से बचाने की कोशिश कर रहे हैं और दौर वह पुर फ़ितन कि अल अयाज़ बिल्लाह तआला। गली गली में नई नई बद मज़हबियाँ, कूचे कूचे में बल्कि क़दम क़दम पर नई नई बे दीनियाँ और हम ग़ुरबाए अहले सुन्नत दौलते ईमान रखने वालों का अल्लाह और उस का प्यारा इज़्ज़त वाला महबूब ही हाफ़िज़ व निगेहबान जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम। आज अगर मज़हबी गिरोहों की तरफ़ नज़र कीजिये तो वह मिरज़ाई, क़ादयानी, वहाबी, ग़ैर मुक़ल्लिद, वहाबी देवबन्दी, राफ़ज़ी, ख़ारजी, चकड़ालवी, नेचरी,

ख़ाकसारी, बाबी, बहाई, आग़ा ख़ानी वग़ैरहुम मुरतद्दीन के गिरोह दिखाई दें गे, कहीं हिन्दू व मुस्लिम इत्तिहाद का ज़ोर है तो कहीं मुस्लिम व मुरतद और मुस्लेमीन व कुफ़्फ़ार अछूत के इत्तिहादो विदाद का शोर है। किसी तरफ़ तहरीर व तक़रीर में बद मज़हबों को क़ाइद बनाया जा रहा है और अगर मजलिसे क़ानून साज़ देखिये तो या तो उस के मिम्बर शरीअत से जाहिल, बद मज़हब से ना वाक़िफ़ और ख़ुदा व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अहकाम से ग़ाफ़िल मिलेंगे, या खुले हुए नेचरी बद मज़हब मुलहिद दहरिये और मुरत्तिब करें इस्लाम व मुस्लेमीन की फ़लाह व बहबूदी के क़वाइद व क़वानीन। अस्तग़फ़िरुल्लाह, ऐसों से ख़ैर ख़्वाहिये इस्लाम व मुस्लेमीन का गुमान करना ऐसा ही है जैसे कोई शख़्स भूके भेड़िये से हिफ़ाज़त की उम्मीद रखे। यह लोग क़ानून बनाएंगे तो कैसे। मआज़ल्लाह इस्लाम ख़ुश, मुस्लिम आज़ार। कहीं वक़्फ़ बिल पर ज़ोर देंगे तो कभी ख़ुलअ बिल ख़िलाफ़े शरीअत पर शोर करेंगे, कभी मख़लूत तालीम का बिल पास कराएंगे तो कभी क़ाज़ी बिल और शरीअत बिल का शोर मचाएंगे और कहीं अक़ल्लियत व अकसरियत का झगड़ा छेड़ंगे और उन लीडरों के बिलों की फ़ेहरिस्त पेश की जाए तो एक ज़ख़ीम किताब हो जाए। हक़ फ़रमाया मुख़बिरे सादिक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने :

اتخذوا رؤسا جهالا فافتوا بغير علم فضلوا اضلوا او كما قال

यानी आख़िर ज़माने में लोग जाहिलों नाफ़हमों को अपना लीडर और पेशवा क़ाइद बना लेंगे फिर उन से मस्अले दरयाफ़्त करेंगे। वह जाहिल लीडर व क़ाइद अपनी लीडरी बनी रहने के लिये बग़ैर इल्म के फ़तवे देंगे तो ख़ुद भी गुमराह होंगे और ओरों को भी गुमराह करेंगे और इरशाद फ़रमाते हैं सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम :

اذا وسد الامر الی غیر اهله فانتظر الساعة

यानी जब काम ना अहलों के सुपुर्द किया जाए तो क़ियामत का इन्तिज़ार कर।

رواہ البخاری عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ

फिर ग़ज़ब बालाए ग़ज़ब यह कि अवाम मुसलमानों को सुलह कुल्ली वअज़ कहें तो आयात व अहादीस पेश कर के ग़लत तरजमे करेंगे और कहीं मन्सूख़ आयतें और हदीसें सुना कर अहले सुन्नत को गुमराह करने और पेट फ़न्ड को पुर करने की कोशिश करेंगे।

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ ○

सूना जंगल रात अन्धेरी छाई बदली काली है
सोने वालो ! जागते रहियो चोरों की रखवाली है
साथी साथी कह के पुकारूँ साथी हो तो जवाब आए
फिर झुंझला कर सर दे पटकूँ चल रे मौला वाली है

## अतियाते आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु
### अदाएगिये क़र्ज़ की दुआ

اَللّٰھُمَّ اکْفِنِیْ بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ

हर नमाज के बाद 11-11 बार, सुबह व शाम रोज़ाना अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ इसी दुआ की निस्बत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने फ़रमाया कि अगर तुझ पर मिस्ल पहाड़ के भी क़र्ज होगा तो उसे अदा कर लेगा।

(अल मलफूज, हिस्सा चहारुम, स. 6)

# वुसअते रिज़्क़ की दुआ

अर्ज़ : आमदनी की क़िल्लत और अहलो अयाल की कसरत, सख़्त कुलफ़त है।

इरशाद : يَامُسَبِّبَ الْاَسْبَابْ 500 बार

अव्वल व आख़िर 11-11 बार दुरूद शरीफ़ बाद नमाज़ इशा क़िब्ला रू बा वुज़ू नंगे सर ऐसी जगह जहाँ सर और आसमान के दरमियान कोई चीज़ हाइल न हो यहाँ तक कि सर पर टोपी भी न हो पढ़ा करो। (अल मलफ़ूज़, हिस्सा दौम, स. 61)

# सनम कदों को देख कर पढ़ने वाली दुआ

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا لَّا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ

(इस दुआ से मुतअल्लिक़) हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस रिवायत फ़रमाई कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं ज़ो कुफ्र की कोई बात देखे या सुने और उस वक़्त यह दुआ पढ़े तो दुनिया में जितने मुशरिक मर्द और मुशरिका औरतें हैं उन सब की गिनती के बराबर सवाब पाए। (अल मलफ़ूज शरीफ़, हिस्सा दौम, स. 105)

# परेशानी दूर करने का मुजर्रब अमल

ला हौल शरीफ़ की कसरत करें यह 69 बलाओं को दफ़अ करती है उन में सब से आसान तर परेशानी है और 60 बार पढ़ कर पानी पर दम कर के रोज़ पी लिया करें अव्वल व आख़िर ग्यारह ग्यारह मरतबा दुरूद शरीफ़। (अल मलफ़ूज शरीफ़ हिस्सा अव्वल, स. 63)

# बरकते रिज़्क़ की दुआ

**अर्ज़ :** बरकते रिज़्क़ की कोई दुआ हुज़ूर इरशाद फ़रमाएं, मैं आज कल बहुत परेशान हूँ ?

**इरशाद :** एक सहाबी ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ की दुनिया ने मुझ से पीठ फेर ली। फ़रमाया क्या तुम्हें वह तस्बीह याद नहीं जो तस्बीह है मलाइका की और जिस की बरकत से रोज़ी दी जाती है। ख़ल्क़े दुनिया आएगी तेरे पास ज़लील व ख़्वार हो कर तुलूअ फ़ज्र के साथ 100 बार कहा कर :

سُبْحَانَ اللهِ بِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللهَ

उन सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सात दिन गुज़रे थे कि ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर अर्ज़ की हुज़ूर ! दुनिया मेरे पास इस कसरत से आई कि मैं हैरान हूँ कहाँ उठाऊँ, कहाँ रखूँ, इस तस्बीह का आप भी विर्द रखें हत्तल इमकान तुलूए सुबह सादिक़ के साथ रोज़ वर्ना सुबह से पहले जमाअत क़ाइम हो जाए तो उस में शरीक हो कर बाद को अदद पूरा कीजिये और जिस दिन क़ब्ल नमाज़ भी न हो सके तो ख़ैर तुलूअ शम्स से पहले।

(अल मलफ़ूज़ शरीफ़, हिस्सा अव्वल, अव्वल, स. 63,64)

# बुख़्वार दूर करने का मुजर्रब अमल

सूरए मुजादला शरीफ़ जो अठाइसवें पारे की पहली सूरत है बाद अस्र तीन मरतबा पढ़ कर पानी पर दम कर के पिलाइये अव्वल व आख़िर ग्यारह ग्यारह मरतबा दुरूद शरीफ़ 3, रोज़ तक।

(अल मलफ़ूज़ शरीफ़, हिस्सा सौम, स. 1)

**नोट :** इन सारे वज़ाइफ़ व दुआ का फ़ायदा उसी को मिलेगा जो सुन्नी सहीहुल अक़ीदा होने के साथ साथ तमाम बद मज़हबों, बद दीनों, काफ़िर, मुरतद्दों वहाबियों, देवबन्दियों, तब्लीग़ियों, ग़ैर मुक़ल्लिदों, राफ़ज़ियों, क़ादयानियों वग़ैरहुम से बचता होगा।